रजिस्ट्री सं० डी० 221 REGISTERED NO. D-221

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 23] नई दिल्ली, शनिवार, जून 8, 1968 (ज्येष्ठ 18, 1890)
No. 23] NEW DELHI, SATURDAY, JUNE 8, 1968 (JYAISTHA 18, 1890)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

नोटिस
NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 17 मई 1968 तक प्रकाशित किये गये हैं :—
The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 17th May 1968 :—

अंक Issue No.	संख्या और तारीख No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subjects
84	13(3)/68-COR dt. 8-5-68	Min. of Labour Employment & Rehabilitation.	Appointment of a new member in the Refugee Relief and Reh. Department Govt. of West Bengal.
	सं० 13(3)/68 सी० ओ० आर० दिनांक 8-5-68	श्रम रोजगार तथा पुनर्वास मंत्रालय	शरणार्थी सहायता पुनर्वास विभाग पश्चिमी बंगाल सरकार में एक नए सदस्य की नियुक्ति ।
85	No. 78-ITC(PN)/68 dt. 9-5-68	Min. of Commerce	Import Policy for Registered Exporters for the year April/68—March 1969.
86	No. SC-II-14(3)/68 dt. 10-5-68	Min. of Steel Mines & Metals	Appointment of a Committee of Inquiry to conduct a thorough and comprehensive inquiry into all aspects of the working of the Min. of Iron and Steel and also to enquiry into transacting relating to other parties to whom large licences/permits had been issued from 1951-52 onwards.
87	No. 79-ITC(PN)/68 dt. 10-5-68.	Min. of Commerce	Import policy for Registered Exporters for the Year April/68 March 1969.
88	No. 80-ITC(PN)/68 dt. 13-5-68	Min. of Commerce	Conversion of actual user licences for raw materials, components, spares and non-ferrous Metals for Importing steel and *vice-versa*—Paragraph 85 of the Import Trade Control Hand Book of Rules and Procedure, 1967 and 1968.
89	No. 37/1/IV/68/T dt. 14-5-68	Lok Sabha Sectt.	Order published by the President for general information.
	सं० 37/1/4/68 दिनांक 14-5-68	लोक सभा सचिवालय	राष्ट्रपति का आदेश सामान्य सूचना के लिए प्रकाशित करना ।
90	No. 81-ITC(PN)/68, dt. 14-5-68,	Min. of Commerce.	Import Policy for Registered Exporter for the year April 1968—March/69 condition on licences issued against export of Gem & Jewellery items.
91	No. RS-1/2/68-L, dt. 15-5-68	Rajya Sabha Sectt.	Order published by the President for general information.
	सं० आर० एस० 1-2-68 एल० दिनांक 15-5-68	राज्य सभा सचिवालय	राष्ट्रपति का आदेश सामान्य सूचना के लिए प्रकाशित करना ।
92	No. 82-ITC(PN)/68 dt.15-5-68	Min. of Commerce	Import Policy for the year April/68-March 1969.
93	No. 37/1/V/68/T, dt. 16-5-68	Lok Sabha Sectt.	Order published by the President for general information.
	सं० 37/1/5/68 दिनांक 16-5-68	लोक सभा सचिवालय	राष्ट्रपति का आदेश सामान्य सूचना के लिए प्रकाशित करना ।
94	No. 83-ITC(PN)/68, dt. 16-5-68	Min. of Commerce	Import Policy for Registered Exporters for the year April/68-March 1969.
95	No. 4/46/67-TEX(C) dt. 17-5-68	Do.	Extension of the term of office of the All India Handloom Board, upto 30th September 1968.
	सं० 4 (46)-टैक्स-(सी) 67 दिनांक 17-5-68	वाणिज्य मंत्रालय	अखिल भारतीय हथकरघा बोर्ड की कार्यविधि को 30 सितम्बर 1968 तक बढ़ाना ।

दलेलसिंह

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी । मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं ।

Copies of the *Gazette Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these *Gazettes*.

M91GI/68

विषय सूची (CONTENTS)

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	423
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	581
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . .	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . .	477
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम . . .	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों सम्बन्धी प्रवर समितियों की रिपोर्ट . .	—
भाग II—खंड 3—उप-खंड (1)—(रक्षा मन्त्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) . . .	1211
भाग II—खंड 3—उप-खंड (2)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश अधिसूचनाएं . .	2657
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश . .	247
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .	465
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें .	221
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं .	73
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं .	183
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें .	101
पूरक संख्या 23—	
1 जून 1968 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी सम्बन्धी साप्ताहिक रिपोर्ट .	925
11 मई 1968 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म, तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु से सम्बन्धित आंकड़े .	941

	Page
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court .. .. — — —	423
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court — — — —	581
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence — — — — —	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc. of Officers issued by the Ministry of Defence —	477
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations — — — — —	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills — — — —	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules, (including orders, bye-laws, etc., of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministries of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) — — — — ..	1211
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	2657
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence —	247
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	465
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta —	221
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners .. — .. — — —	73
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies — — — — —	183
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies — —	101
SUPPLEMENT No. 23—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 1st June 1968 — — —	881
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 11th May 1968 — — —	899

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1968

सं० 34-प्रेज/68—राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा अथवा साहस के कार्यों के लिये "सैना पदक"/"आर्मी मैडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. मेजर जगवन्त सिंह बाथ (आई० सी०-14468), पैराशूट रेजिमेंट।

12 मार्च, 1967 को मेजर जगवन्त सिंह बाथ पैराशूट रेजिमेंट की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे जो मिज़ो जिले में उपद्रवियों के विरुद्ध कार्यवाही में लगी थी। यह सूचना पाते ही कि बुआकमुआल के क्षेत्र में उपद्रवी भारी संख्या में सरगर्मी कर रहे हैं उन्होंने अपनी कम्पनी को लेकर एक नदी पार की जिसमें बाढ़ आई हुई थी और सायंकाल तक उन्होंने बुआकमुआल के दक्षिण पूर्व के एक घने जंगल में एक मजबूत अड्डा बना लिया। रात के लगभग आठ बजे दो अग्रवर्ती प्लाटूनों ने गांव को घेर लिया और तीसरी प्लाटून के साथ मेजर बाथ ने गांव में प्रवेश किया। उपद्रवियों ने गोलाबारी शुरू कर दी। इसके बावजूद मेजर बाथ ने उपद्रवियों पर सफल धावा किया और चार को मृत्यु के घाट उतार दिया तथा तीन को भारी मात्रा में हथियार, गोलाबारूद तथा कागजात के साथ पकड़ लिया।

इस कार्यवाही के दौरान मेजर जगवन्त सिंह बाथ ने साहस और नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

2. मेजर बलवंत सिंह विष्ट (आई० सी०-14736), पैराशूट रेजिमेंट।

23 अप्रैल, 1967 को मेजर बलवन्त सिंह विष्ट पैराशूट रेजिमेंट की एक कम्पनी-कालम की कमान कर रहे थे जिसने असम में हैलीकाप्टर द्वारा एक विशेष कार्यवाही की। 27 अप्रैल, 1967 को उन्हें बटालियन हैडक्वार्टर द्वारा सूचित किया गया कि एक उपद्रवी मिज़ो नेता 16 मील दूर दारलुंग के निकटवर्ती क्षेत्र में छिपा हुआ है और उन्हें उसको पकड़ने का आदेश दिया गया। 29/30 अप्रैल, 1967 की रात को मेजर विष्ट अन्धेरे की ओट में आगे बढ़े और दारलुंग तथा एक समीपवर्ती गांव पर छापा मारा। एक बालक से सुराग मिलने पर, वह 6 जवानों और एक मार्गदर्शक को लेकर निकल पड़े। एक कठिन रास्ते को पार कर लेने के बाद जब मार्गदर्शक ने अज्ञानता दिखाई तो वे और सुरागों की खोज करते रहे। वे अचानक एक ऐसे खुले स्थान पर जा पहुंचे जहां उन्हें दो झोंपड़ियां मिलीं जो होशियारी से छिपाई हुई थी। मेजर विष्ट और उनके जवानों ने झोंपड़ियों पर छापा मारा और उनमें रहने वाले सभी को पकड़ लिया।

इस कार्यवाही में मेजर बलवन्त सिंह विष्ट ने साहस-दृढ़-निश्चय तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

3. मेजर शेहखोज़िन केपगेन (आई० सी०-14430), असम रेजिमेंट।

21 जनवरी, 1967 को मेजर केपगेन को एक रेजिमेंट के तीन भगोड़ों को पकड़ लाने का कार्य सौंपा गया जो कुछ हथियार और गोला बारूद लेकर भाग गये थे। पहले यह सूचना मिली थी कि पिछली रात भगोड़े नकसल खोला (असम) के निकट देखे गये, किन्तु बाद में वे घने जंगल में गायब हो गये। मेजर केपगेन अपने पैट्रोल के साथ जंगल में घुस गए। लगभग 30 गज की दूरी पर भगोड़ों को एक बड़ी झाड़ी के नीचे देखते ही उन्होंने उन पर तुरन्त धावा बोल दिया। उनके जवान पीछे-पीछे थे। जब भगोड़े अपनी राइफलों और हथगोलों को संभालने का प्रयत्न करने लगे तो मेजर केपगेन ने उन्हें चेतावनी दी कि वे हथियार डाल दें अन्यथा उन्हें गोली मार दी जाएगी। भगोड़ों ने और चारा न देखकर हथियार डाल दिए।

इस कार्यवाही में मेजर शेहखोजिन केपगेन ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

4. मेजर ओम प्रकाश सभरवाल (आई० सी०-7311), पैराशूट रेजिमेंट।

20 जून और 28 जुलाई, 1967 के मध्य दो ऐसी कार्यवाहियों में मेजर ओम प्रकाश सभरवाल को कालम कमाण्डर तैनात किया गया जिनमें उस क्षेत्र में मौजूद कुछ उपद्रवी मीज़ो नेताओं को पकड़ा जाना था। इनमें से एक कार्यवाही के दौरान यद्यपि नेता गांव में मौजूद नहीं था, इस अफसर ने सूचना एकत्रित की और शीघ्रता से उपद्रवियों के एक छिपने के स्थान पर धावा बोल दिया और कुछ महत्वपूर्ण कागजात कब्जे में कर लिए। 25 जून, 1967 को अपने कालम के साथ कष्टमय यात्रा के पश्चात् उन्हें एक क्षेत्र में उपद्रवियों के जमाव की सूचना मिली। रात के दो बजे उन्होंने उपद्रवियों के ठिकाने पर धावा करके उन्हें बिल्कुल हैरानी में डाल दिया। इसके बाद हुई मुठभेड़ के दौरान उन्होंने एक सेक्शन का स्वयं नेतृत्व किया जब कि शेष कालम ने गांव को घेर लिया। इस कार्यवाही में एक उपद्रवी मारा गया, एक घायल हुआ और कुछ हथियारों और गोला बारूद के साथ तीन उपद्रवी पकड़ लिए गये। पकड़े गये उपद्रवियों से खबर निकालकर वे उपद्रवियों के कैम्प तथा उनके बटालियन हैडक्वाटर पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े। जब उनका एक छोटा कालम नदी पार कर रहा था तो उपद्रवियों ने एक ऊंचे ठिकाने से हल्की मशीनगन से गोलाबारी और हथगोले फेंकने शुरू कर दिये। यह महसूस करते हुए कि उनके

जवान बुरी तरह घिर गये हैं, उन्होंने उपद्रवी ठिकाने पर प्रहार करने का निश्चय किया। भारी गोलाबारी के बीच उन्होंने अपने जवानों को आगे बढ़ाया और उपद्रवियों द्वारा लगाई गई घात को तोड़ दिया तथा उन्हें भागने के लिए विवश कर दिया। दूसरी कार्यवाही में जब वे और उनकी प्लाटून उपद्रवियों के हैडक्वार्टर से 500 गज की दूरी पर रह गई तो उन पर हल्की मशीनगन और राइफलों से गोलाबारी की गई। अविचलित, वे अपने जवानों को आगे ले गये और उपद्रवियों से भिड़ गये जो अपने पीछे दो मृत, कुछ हथियार, गोला बारूद तथा नकदी छोड़ कर भाग गये।

इस सारी कार्यवाही में मेजर ओम प्रकाश सभरवाल ने साहस निश्चय और नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

5. मेजर विशन सिंह (आई० सी०-14513), ग्रेनेडियर्स।

11 सितम्बर, 1967 को मेजर विशन सिंह को नाथूला पर हमारे सैनिकों द्वारा तार की बाड़ मजबूत करने के कार्य के पर्यवेक्षण के लिए तैनात किया गया। उन्होंने अनुरक्षी/बचाव टुकड़ियों और तार की बाड़ लगाने वाली टोलियों को काम पर ठीक-ठीक लगा दिया। निश्चित समय पर काम शुरू हो गया। चीनी सेनाओं ने हमारे सैनिकों को डराने के लिए राइफलों से गोलियां चलाईं। शत्रु के भारी सहायक हथियारों द्वारा गोलाबारी शुरू करने के बावजूद भी मेजर विशन सिंह ने अपना काम जारी रखा। यह निश्चित कर लेने पर कि बाईं ओर कार्य संतोषजनक चल रहा है वह दाईं ओर सहायता करने आए। शत्रु ने उनपर तथा उनके शेष सैनिकों पर एम० एम० जी० से गोलाबारी शुरू कर दी। दो अन्य अफसरों के साथ उन्होंने गोलाबारी और हथगोलों से चीनी सेनाओं को बराबर दबाए रखा। जब वह एक हथगोला फेंक रहे थे तो उनके दाएं बाजू और एक टांग में हल्की मशीनगन की गोलियां लगीं और दूसरी टांग में बम के टुकड़े लगे। इसके बावजूद पीछे हटने से पहले उन्होंने हल्की मशीनगन से एक मैगजीन फायर किया।

इस सम्पूर्ण कार्यवाही में मेजर विशन सिंह ने साहस, कर्त्तव्य-निष्ठा और नेतृत्व का परिचय दिया।

6. कप्तान सूरज प्रकाश बक्शी (ई० सी०-51998), बिहार रेजिमेंट।

9 जून, 1967 को रात को 3 बजे कप्तान सूरज प्रकाश बक्शी ने जो बिहार रेजिमेंट की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, मीजो पहाड़ी क्षेत्र में एक गांव के निकट एक अड्डा स्थापित किया। वह एक प्लाटून के साथ गांव की सीमा पर स्थित झोपड़ियों की तलाशी लेने के लिए आगे बढ़े जहां सशस्त्र मीजो उपद्रवियों के ठहरने की खबर मिली थी। जब यह दल झोपड़ियों से 50 गज के फ़ासले पर पहुंचा तो लगभग 20 उपद्रवी गोली चलाते हुए बाहर आए और भागने लगे। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए कप्तान बक्शी अपनी प्लाटून को आगे ले गये और उपद्रवियों पर धावा बोल दिया। उन्होंने तीन उपद्रवियों को गोली से उड़ा दिया और एक के संगीन घोंप दी। उनके सैनिकों ने पांच अन्य उपद्रवियों को ढेर कर दिया और शेष ग्यारह को पकड़ लिया। इस मुठभेड़ में कप्तान बक्शी के सिर में एक उपद्रवी की गोली लगी।

इस कार्यवाही में कप्तान सूरज प्रकाश बक्शी ने साहस और नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

7. कप्तान नच्छत्तर सिंह बर्न (ई० सी०-56255), आर्टिलरी

11 सितम्बर से 13 सितम्बर, 1967 तक कप्तान नच्छत्तर सिंह बर्न नाथूला में प्रेक्षण चौकी अफसर के रूप में कार्य कर रहे थे। जब उन्हें आक्रामक चीनी सेनाओं का मुकाबला करने का आदेश दिया गया तो उन्होंने चीनियों पर तेज और सही गोलीबारी करा कर उनके छोटे हथियारों की गोलीबारी को शान्त कर दिया और उनके कुछ बंकरों को नष्ट कर दिया। शीघ्र ही उन पर चीनी तोपखाने और इन्फैंट्री द्वारा गोलाबारी होने लगी। उनका तकनीकी सहायक मारा गया, रेडियो आपरेटर घायल हो गया और उनका रेडियो सेट नष्ट कर दिया गया, फिर भी कप्तान बर्न ने एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर जा-जा कर अपनी संचार लाइन के सहारे चीनी सेनाओं पर गोलाबारी करने का निर्देश करते रहे और उन्हें भारी नुक़सान पहुंचाया। 11 सितम्बर से 13 सितम्बर, 1967 तक कप्तान बर्न खतरनाक मौसम और चीनी सेनाओं की भारी गोलाबारी का सामना करते हुए अपनी चौकी पर डटे रहे। तीन दिन तक उन्होंने रात और दिन बराबर काम किया और चीनी सेनाओं पर तोपखाने से सही गोलाबारी करके उन्हें भारी क्षति पहुंचाई जिसके फलस्वरूप हमारी सेना इस अचानक और अनुसेजित आक्रमण का मुकाबला कर सकी।

इस कार्यवाही में कप्तान नच्छत्तर सिंह बर्न ने साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

8. कप्तान पलक्क पिल्लिल पेली पेली (एम०-30738), स्थल सेना चिकित्सा कोर

11 सितम्बर, 1967 को जब चीनी फौजों ने नाथूला पर अचानक गोलाबारी शुरू कर दी तो कप्तान पलक्क पिल्लिल पेली पेली को आदेश मिला कि वह आगे बढ़ कर एक अग्रिम मरहम-पट्टी स्टेशन स्थापित करें ताकि अग्रवर्ती क्षेत्र में लड़ते हुए सैनिकों के लिए चिकित्सा सुविधाओं का प्रबंध किया जा सके। चीनी सेनाओं की भारी गोलाबारी के बावजूद उन्होंने 14,000 फुट की ऊंचाई पर शीघ्रता से मरहम-पट्टी स्टेशन स्थापित कर दिया। यद्यपि 11 सितम्बर से 14 सितम्बर, 1967 तक मरहम-पट्टी स्टेशन पर लगातार भारी गोलाबारी होती रही फिर भी उन्होंने और उनके जवानों ने दिन-रात काम करके लड़ाई में हुये सभी हताहतों का उपचार किया और इस प्रकार अनेक अमूल्य जानों की रक्षा की।

इस कार्यवाही में कप्तान पलक्क पिल्लिल पेली पेली ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

9. कप्तान सतीश कुमार सूद (ई० सी०-52620), आर्टिलरी

12 सितम्बर, 1967 को नाथूला में एक अतिरिक्त प्रेक्षण चौकी अफसर को कैमल बैक नामक 14,973 फुट ऊंचे ठिकाने पर भेजने की आवश्यकता पड़ी। कप्तान सतीश कुमार सूद ने वहां जाने के लिए अपनी सेवाएं प्रस्तुत कीं। यह जानते हुये भी कि ठिकाने को जाने के रास्ते और स्वयं ठिकाने पर चीनी तोपखाने तथा

पैदल सेना के मार्टरों से भीषण गोलाबारी हो रही थी। कड़ाके की सरदी तथा भारी गोलाबारी की परवाह न करते हुए वे 12/13 सितम्बर, 1967 की रात को ठिकाने पर जा पहुंचे। प्रातः काल जब उन्होंने लक्ष्यों पर कार्यवाही करनी आरम्भ की तो उनके ठिकाने पर चीनी सेनाओं की गोलाबारी और भी बढ़ गई। वह बिना घबराए एक चट्टान से दूसरी चट्टान की ओर बढ़ते रहे और चीनी सेनाओं पर गोलाबारी का निर्देश करते रहे। यद्यपि उनका रेडियो तथा संचार व्यवस्था बारबार टूट गई फिर भी उन्होंने शीघ्रता से उसे ठीक करके सम्पर्क स्थापित कर लिया।

13 सितम्बर, 1967 को सारे दिन कप्तान सूद चीनियों के तोपों तथा मार्टर ठिकानों पर तोपखाने से अचूक गोलाबारी करवाते रहे जिसके परिणामस्वरूप चीनी तोपखाने के कम से कम तीन मार्टर बकार हो गये, उनकी संचार व्यवस्था ठप्प हो गई और वे भारी संख्या में हताहत हुए।

इस कार्यवाही में कप्तान सतीश कुमार सूद ने साहस, संकल्प तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

10. सैकण्ड लेफ्टिनेंट नवीन चन्द्र गुप्ता (आई० सी०-16951) सिगनल्ज़।

11 सितम्बर, 1967 को जब नाथूला (केन्द्रीय वम्प) में पनघाट के साथ तार बिछाने का काम किया जा रहा था तो सैकण्ड लेफ्टिनेंट नवीन चन्द्र गुप्ता अपने ब्रिगेड कमाण्डर के साथ गये। सुबह लगभग साढ़े पांच बजे चीनी सेनाओं ने अचानक गोलाबारी आरम्भ कर दी जिसके परिणामस्वरूप केन्द्रीय वम्प तथा दक्षिणी शोल्डर के मध्य संचार लाइनों में बाधा पड़ गई। भारी गोलाबारी के कारण संचार व्यवस्था को चालू करने के लिए भेजे गये दल सफल नहीं हो सके। क्योंकि संचार लाइन को ठीक करना अत्यन्त आवश्यक था, सैकण्ड लेफ्टिनेंट गुप्ता अपनी निजि सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए दक्षिणी शोल्डर की ओर बढ़े और दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में से कभी रेंगते और कभी दौड़ते हुए वे लक्ष्य पर पहुंच गये। उन्होंने चौकी से जहां केवल प्लाटून कमाण्डर तथा एक और व्यक्ति रह गये थे, सब सूचना प्राप्त की। जब वे चौकी पर थे तो हथगोलों से उन्होंने चीनी सेनाओं को उलझाया तथा एक घायल अफसर को वापिस लाने में प्लाटून कमाण्डर की सहायता की। ब्रिगेड कमाण्डर का उत्साहवर्द्धक संदेश तथा एक रेडियो सेट देने के बाद वे केन्द्रीय वम्प वापिस लौट आए।

इस कार्यवाही में सैकण्ड लेफ्टिनेंट नवीन चन्द्र गुप्ता ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

11. सैकण्ड लेफ्टिनेंट जसबीर सिंह (आई० सी०-16293), इंजीनियर्स

सैकण्ड लेफ्टिनेंट जसबीर सिंह 9 जुलाई, 1966 को एक इंजीनियर रेजिमेंट की फील्ड कम्पनी के प्लाटून की कमान कर रहे थे। उन्हें एक पुराने सुरंग-क्षेत्र से लगभग 1150 सुरंगें साफ करने का आदेश दिया गया था। अनेक जोखिमों के बावजूद 11 जुलाई 1966 को उन्होंने अपनी प्लाटून के साथ काम आरम्भ किया और काफी सुरंगें साफ कर दी थीं, जब एक सैपर ने रिपोर्ट दी कि वह एक स्फोट सुरंग का पता नहीं लगा सका है। सैकण्ड लेफ्टिनेंट जसबीर सिंह तुरंत उसको खोजने के लिए आगे बढ़े। जब वे सुरंग का पता लगाने की कोशिश कर रहे थे तो अचानक वे एक पत्थर से ठोकर खा कर एक सुरंग पर गिर पड़े और वह सुरंग फट गई। उनका दायां पांव टखने तक उड़ गया और दाहिनी आंख फूटकर बाहर निकल आई। इस खतरे का अनुभव करते हुए कि जल्दी में उनके जवान उन्हें बचाने के लिये सुरंग क्षेत्र में न आ जायं वे 10 गज तक रेंग कर चले आये जब कि उनके जवानों ने उन्हें बचा लिया। अपने घावों की परवाह न करते हुए, वे अपने सैनिकों को काम करते रहने के लिये प्रोत्साहित करते रहे।

सैकण्ड लेफ्टिनेंट जसबीर सिंह ने दिए गये कार्य को पूरा करने में साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

12. जे० सी०-36079 नायब सूबेदार महादेव जाधव, पैराशूट रेजिमेंट।

26 जून, 1967 को जब छार्तवी गांव पर हमला हुआ तो नायब सूबेदार महादेव जाधव एक अग्रिम प्लाटून की कमान कर रहे थे जो एक उपद्रवी संतरी की हल्की मशीनगन की गोलाबारी की लपेट में आ गई। उपद्रवियों को छिन्न-भिन्न करने के लिए उन्होंने शीघ्र अपनी प्लाटून को आगे बढ़ाया और एक सैक्शन के साथ उन पर चढ़ाई कर दी जिसके परिणाम-स्वरूप एक उपद्रवी अपनी स्टेनगन और 197 गोलियों के साथ पकड़ लिया गया।

दूसरी बार 27 जुलाई, 1967 को उनके कालम पर फिर उपद्रवियों ने घात लगाई। निजी सुरक्षा का ध्यान न करते हुए उन्होंने अपने सैनिकों के साथ चढ़ाई की और स्वयं उपद्रवियों की हल्की मशीनगन पर एक हथगोला फेंका जिससे एक उपद्रवी मारा गया। यह कार्य उपद्रवी पड़ाव को समाप्त करने का साधन बना।

इस सारी कार्यवाही में नायब सूबेदार महादेव जाधव ने साहस तथा संकल्प का प्रदर्शन किया।

13. जे० सी०-39184 नायब सूबेदार राघव प्रसाद पान्डे, राजपूत रजिमेंट (**मरणोपरान्त**)

11 सितम्बर, 1967 को नायब सूबेदार राघव प्रसाद पान्डे एक कम्पनी के प्लाटून कमाण्डर थे। इस कम्पनी को नाथूला में उत्तरी शोल्डर पर तारों की बाड़ लगाने वाले इंजीनियरों के बचाव के लिए भेजा गया था। अचानक ही चीनी सेनाओं ने सामने तथा पार्श्वों से गोली चलाना आरम्भ कर दिया। निजि सुरक्षा की परवाह न करते हुए नायब सूबेदार पान्डे ने अपने सामने वाले चीनी पड़ाव पर धावा बोल दिया और दो चीनी सिपाहियों के संगीन घोंप दी। खुले में लड़ रही हमारी सेनाओं को चीनियों के हल्की मशीनगन वाले बंकर से भारी क्षति पहुंच रही थी। जब उन्होंने वहां पहुंचने की कोशिश की तो वह चीनियों की हल्की मशीनगन की बौछार का निशाना बन गए जिसके कारण घटनास्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार राघव प्रसाद पान्डे ने साहस तथा दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

14. 2640287 हवलदार बृज लाल, ग्रेनेडियर्स।

11 सितम्बर, 1967 को हवलदार बृज लाल रिकाइल-लैस-गन टुकड़ी के कमाण्डर थे जो नाथूला के सेबुला और केन्द्रीय वम्प

क्षेत्र के बीच स्थित थी। जब चीनी फौजों ने हमारे तार बिछाने वाले जवानों पर रिकाइललैस गनों से गोली चलाना आरम्भ किया तो वह अपनी चौकी पर ही जमे रहे और सफलतापूर्वक दो चीनी बंकरों को नष्ट कर दिया। 13 सितम्बर, 1967 को उन्होंने फिर एक चीनी मशीनगन को सफलता के साथ ठंडा कर दिया और दक्षिणी शोल्डर के एक बंकर को ध्वस्त कर दिया। उसी दिन उन्हें एक अन्य कठिन कार्य भी सौंपा गया जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया।

इस कार्यवाही में हवलदार बृज लाल ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया।

15. 4146934 हवलदार कूरा राम,
कुमाऊं रेजिमेंट।

30 अगस्त, 1966 को जम्मू तथा काश्मीर के हाई आल्टीट्यूड वारफेयर स्कूल में ग्लेशियर प्रशिक्षण के दौरान एक रस्सा जिसमें चार अफसर और एक जे० सी० ओ० थे और जिनका नेतृत्व हवलदार इंस्ट्रक्टर कर रहे थे, 200 फुट गहरी एक हिम दरार में गिर पड़ा। हवलदार कूरा राम को, जो उसके पीछे एक अन्य प्रशिक्षण दल का नेतृत्व कर रहे थे, इस घटना का पता लगा। स्वयं को रस्से से मुक्त करके वह तुरन्त घटनास्थल पर जा पहुंचे। हिम-दरार में पहुंचने पर उन्होंने देखा कि एक अन्य इंस्ट्रक्टर बचाव कार्य के लिए पहले ही नीचे पहुंच चुका था। वह तुरन्त उस खतरनाक हिम दरार में फिसल कर उतर गये और अपने साथी के बचाव कार्य में शामिल हो गये। जमाव बिन्दु से काफी नीचे के तापमान में उन दोनों ने बचाव कार्य जारी रखा। उन्होंने दो जीवित अफसरों को बचा लिया और अन्य सदस्यों के शवों को ऊपर ले आये।

इस कार्यवाही में हवलदार कूरा राम ने साहस तथा पहलशक्ति का प्रदर्शन किया।

16. 6251686 लांस नायक एम० जी० एजुथाचन,
सिगनल्ज।

15 सितम्बर, 1965 को लांस नायक एम० जी० एजुथाचन एक गाड़ी में, जिसे वह खुद चला रहे थे, सैनिक डाक जम्मू से पठानकोट ले जा रहे थे। जम्मू से जब वह करीब 15 मील पर थे तो गाड़ी पर पाकिस्तानी वायुयान ने गोलियों की बौछार की जिसके परिणाम स्वरूप उनकी गर्दन, छाती तथा पेट पर गहरे घाव लगे और उनसे खून की धाराएं बहने लगीं। उनकी गाड़ी भी क्षतिग्रस्त हो गई और बेकार हो गयी। हालांकि वहां उपस्थित सभी लोगों ने उन्हें अस्पताल जाने की सलाह दी फिर भी वे उस जगह से नहीं हिले और डाक के थैलों के पास ही बने रहने तथा स्वयं उन्हें पठानकोट ले जाने का आग्रह किया। अन्त में पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश के जी० ओ० सी०, जो संयोगवश उस रास्ते से अपनी स्टाफ कार से गुजर रहे थे, उनको पठानकोट ले गये जहां उन्होंने पहले डाक सुपर्द की और बाद में इलाज के लिए अस्पताल गये।

इस घटना में लांस नायक एम० जी० एजुथाचन ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

17. 1431121 सैपर करनैल सिंह,
इंजीनियर्स। **(मरणोपरान्त)**

11 सितम्बर, 1967 को सैपर करनैल सिंह को, जो नाथूला में तारों की बाड़ लगा रही इंजीनियरों की टुकड़ी में काम कर रहे थे, एक कठिन काम सौंपा गया। बावजूद इसके कि शारीरिक बल तथा संगीनों से कार्य में बाधा डालते हुए चीनी सिपाहियों की संगीनों से उन्हें चोटें आयी, उन्होंने सौंपे गये कार्य को पूरा करने की कोशिशें जारी रखीं। बाद में जब चीनी सेनाओं ने स्वचालित तथा मार्टर गोलाबारी का प्रयोग किया तब भी उन्होंने अपना काम बिना रुके जारी रखा। उनके बाजू में गोलों के टुकड़ों से घाव हो गये परन्तु फिर भी वह विचलित नहीं हुए। ऐसा करते हुए उन्हें एक गोली लगी। राइफल उठाने के लिए वह थोड़ी दूर तक रेंग कर गये परन्तु चोटों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में सैपर करनैल सिंह ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया।

18. 13656135 पैराट्रूपर जोखू सिंह,
पैराशूट रेजिमेंट।

26 जून, 1967 को जब छातवी गांव पर हमला हुआ तो पैराट्रूपर जोखू सिंह एक सेक्शन में थे, जिस पर मिजो के उपद्रवी सन्तरी द्वारा गोलीबारी की गई। वे उपद्रवियों की गोलीबारी की दिशा में दौड़ और उन्होंने सन्तरी को मौत के घाट उतार दिया और उसकी राइफल ले ली। इस कार्यवाही का परिणाम यह हुआ कि गांव के एक भाग से उपद्रवियों का सफाया हो गया। दूसरी बार 27 जून, 1967 को जब उपद्रवियों के हैडक्वार्टर पर चढ़ाई की गई तो पैराट्रूपर जोखू सिंह अपने सेक्शन के आगे दौड़ पड़े और उपद्रवी की एल० एम० जी० चौकी पर हथगोला फेंका। इस साहसिक कार्य का परिणाम यह हुआ कि उपद्रवियों की हल्की मशीनगन ठण्डी पड़ गई और उनके सेक्शन को सौंपा गया कार्य सफलता के साथ पूरा हुआ।

इस कार्यवाही में पैराट्रूपर जोखू सिंह ने साहस और पहल शक्ति का प्रदर्शन किया।

सं० 35-प्रेज०/68—राष्ट्रपति, निम्नांकित कार्मिकों को असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा अथवा साहस के कार्यों के लिए "वायुसेना पदक"/ "एयर फोर्स मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :

1. ग्रुप कैप्टेन जगदीश राज भसीन (3591), जी० डी० (पी०)

ग्रुप कैप्टेन (तब विंग कमांडर) जगदीश राज भसीन अप्रैल 1966 से मई 1967 तक एक स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। स्क्वाड्रन को एक नए किस्म के वायुयान से सुसज्जित किए जाते समय उन्हें स्क्वाड्रन के स्टूयूअर्ड का कार्यभार सौंपा गया। स्क्वाड्रन का प्रमुख कार्य पायलटों को नए किस्म के वायुयान के इस्तेमाल में प्रशिक्षित करना था। अनेक कठिनाइयों के बावजूद, उन्होंने इस कार्य के लिए अपने वश के सभी साधनों को बेहद तेजी से संजोया और दिन में करीब 12 घण्टे काम करके उस उद्देश्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। स्क्वाड्रन में अपनी नियुक्ति के दौरान वे उड़ान सुरक्षा के लिए प्रभावशाली उपाय काम में लाए।

ग्रुप कैप्टेन जगदीश राज भसीन ने व्यावसायिक निपुणता तथा असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया जो भारतीय वायु सेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुकूल हैं।

2. ग्रुप कैप्टेन जसपाल सिंह (2451), जी० डी० (पी०)।

बाम्बर स्क्वाड्रन के कमाण्डर के नाते ग्रुप कैप्टेन जसपाल सिंह ने प्रशंसनीय ढंग से अपने स्क्वाड्रन का नेतृत्व किया। उन्होंने अन्तर स्क्वाड्रन आयुध प्रतियोगिताओं में अनेक बार ख्याति प्राप्त की। पांच वर्ष तक वह एयर हैडक्वार्टर के उड़ान सुरक्षा संगठन से सम्बन्धित रहे और अपनी संगठन योग्यता तथा अगाध तकनीकी ज्ञान से उन्होंने अनेक योजनाएं क्रियान्वित कीं। एक विशाल बहु-कार्य-स्टेशन के कमाण्डर के रूप में उन्होंने कई पेचीदा संक्रियात्मक, प्रशिक्षण, अनुरक्षण तथा प्रशासकीय समस्याओं को सफलतापूर्वक सुलझाया। उन्होंने 4,000 घण्टों से ऊपर दोष-रहित उड़ानें भरीं।

ग्रुप कैप्टेन जसपाल सिंह ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल तथा असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया जो भारतीय वायु सेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुकूल है।

3. विंग कमांडर जसमेर सिंह धनोआ (4428), जी० डी० (पी०)।

विंग कमांडर जसमेर सिंह धनोआ ने हाल ही में ट्रांसपोर्ट स्क्वाड्रन की कमान सम्भाली है। 1953 से 1955 तक उन्होंने पूर्वी प्रदेशों में विभिन्न मिशन पूरे किए। उसके बाद उन्होंने ट्रांसपोर्ट ट्रेनिंग विंग में इंस्ट्रक्टर के रूप में और एयर हैडक्वार्टर कम्यूनिकेशन स्क्वाड्रन की वी० आई० पी० उड़ानों में फ्लाइट कमांडर के रूप में सेवा की। उनका 6,000 घंटों से अधिक दुर्घटना-रहित उड़ान-रिकार्ड है।

विंग कमांडर जसमेर सिंह धनोआ ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल तथा असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया जो भारतीय वायु सेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुकूल है।

4. विंग कमाण्डर मोहन इन्दर सिंह (4219), जी० डी० (पी०)।

विंग कमाण्डर मोहन इन्दर सिंह का एयर फोर्स की संक्रियाओं में एच० एस०-748 वायुयान के प्रवेश के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। एच० एस०-748 वायुयान का वर्तमान बल जिस कुशलता के साथ स्क्वाड्रन में कार्रवाई कर रहा है वह मुख्यतः उनके व्यावसायिक कौशल, दूरदर्शिता तथा उत्तम योजना का ही परिणाम है। इस स्क्वाड्रन की कमान करते हुए उन्होंने वी० आई० पी० संचरण ड्यूटियों के लिए आधुनिक टरबो-जेट वायुयानों का निर्बाध परिवर्तन ला दिया। उन्होंने वी० आई० पियों के विमान परिवहन के लिए कम्यूनिकेशन स्क्वाड्रन में उड़ान सुरक्षा का उच्चतम स्तर बनाए रखा। उनको लगभग 6,000 घंटों की उड़ान का श्रेय प्राप्त है।

विंग कमाण्डर मोहन इन्दर सिंह ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल तथा असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया जो भारतीय वायु सेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुकूल है।

5. विंग कमाण्डर मालकोम शर्ले डुंडास वोल्लेन (3641), जी० डी० (पी०)।

विंग कमाण्डर मालकोम शर्ले डुंडास वोल्लेन के अधीन एक नए किस्म के वायुयानों के साथ पुनः लैस अन्तारोधक स्क्वाड्रन की कमान थी। अन्तारोधक कार्य से अतिरिक्त स्क्वाड्रन को कई पायलटों के संपरिवर्तन प्रशिक्षण का कार्य भी सम्भालना पड़ा। विंग कमाण्डर वोल्लेन ने यूनिट का लगातार पर्यवेक्षण करते हुए महान धैर्य तथा साहस के साथ यह कार्य पूरा किया। अपने स्क्वाड्रन के कार्मिकों के संपरिवर्तन के लिए उनके द्वारा तैयार किया गया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम वायु सेना में एक मानक पाठ्यक्रम के रूप में स्वीकृत किया गया। पाकिस्तान के साथ संघर्ष के दौरान विंग कमाण्डर वोल्लेन ने अनेक अभावों तथा प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद शत्रु के वायुयानों का अन्तारोधन करने के लिए दिन-रात अनेक संक्रियात्मक उड़ानें कीं।

विंग कमाण्डर मालकोम शर्ले डुंडास वोल्लेन ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल तथा असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

6. स्क्वाड्रन लीडर एरिक लाएनेल एल्लेन (4582), जी० डी० (पी०)।

जुलाई, 1965 की एक घातक उड़ान दुर्घटना में जब एक स्क्वाड्रन के स्क्वाड्रन लीडर तथा फ्लाइट कमाण्डर दोनों की मृत्यु हो गई तो स्क्वाड्रन लीडर एरिक लाएनेल ऐल्लेन ने स्क्वाड्रन की कमान सम्भाली। उन्होंने ऊषाकाल के सांझ तक और कभी-कभी रात में भी काम किया और बहुत ही कम समय में स्क्वाड्रन के पायलटों के संक्रियात्मक प्रशिक्षण-कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। 1965 में पाकिस्तान के साथ संघर्ष के दौरान उन्होंने अनेक कठिन मिशन पूरे किए। स्क्वाड्रन कमाण्डर की ड्यूटियों के अतिरिक्त उन्होंने 15 मास की अवधि के लिए एक हवाई-मैदान में उड़ान के प्रभारी अफसर की ड्यूटियां भी निभाईं।

स्क्वाड्रन लीडर एरिक लाइनेल एल्लेन ने आद्योपान्त साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

7. स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह अरोड़ा (4983), जी० डी० (पी०)।

स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह अरोड़ा अक्तूबर, 1966 से परिवहन स्क्वाड्रन में काम कर रहे हैं। जम्मू तथा कश्मीर और नेफा क्षेत्रों के ऊपर 2,200 घंटों की उड़ान मिलाकर उन्होंने कुल 4,600 घंटों की उड़ान की है। स्क्वाड्रन को जो भी नए कार्य सौंपे गए उनके लिए उन्होंने हमेशा अपनी सेवाएं अर्पित कीं और उनको पूरा किया। 30 अप्रैल, 1960 को लद्दाख क्षेत्र में एक उड़ान के समय उनके वायुयान का इंजन खराब हो गया। उन्होंने तुरन्त उचित सुधार-कार्रवाई की, और वायुयान को सुरक्षित अड्डे पर ले आए। इसमें न तो सैनिक सामान को कोई क्षति पहुंची अथवा न ही कर्मियों को चोट आई।

स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह अरोड़ा ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल तथा असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

8. स्क्वाड्रन लीडर श्रीनिवास प्रह्लाद देसाई (5005), जी० डी० (पी०)। (मरणोपरान्त)

जून 1967 में स्क्वाड्रन लीडर श्रीनिवास प्रह्लाद देसाई एक

स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे । इस स्क्वाड्रन को उत्तर-पूर्वी सीमान्त एजेन्सी के हवाई अनुरक्षण के कठिन कार्य को संभालने के लिये बुलाया गया । प्रतिकूल मौसम के बावजूद उन्होंने अपने मुट्ठीभर साथियों के साथ सभी अवपातन क्षेत्रों के वर्गीकरण के अपूर्व कार्य को सम्पन्न किया । हवाई अनुरक्षण के संक्रियात्मक कार्यों पर उन्होंने 104 घंटों की उड़ानें कीं । उन्होंने रसद गिराने की तकनीक में भी कई पायलटों को प्रशिक्षित किया । 27 जुलाई 1967 को स्क्वाड्रन लीडर देसाई 10,700 फुट की ऊंचाई पर अत्यन्त दुर्गम पर्वतीय प्रदेश में स्थित एक बीरान चौकी पर रसद गिराने के मिशन को सम्भालने के लिये बुलाया गया । मिशन की कठिनाइयों को अच्छी प्रकार जानते हुए उन्होंने इस उड़ान का कार्य संभाला । छोटे-से अवपातन क्षेत्र पर प्रथम उड़ान करके ही उन्होंने बिल्कुल सही स्थान पर सरद गिराई । इसके बाद के अवपातन के लिये उन्होंने एक और चक्कर लगाया तो अचानक ही वायुयान का बायां इंजन खराब हो गया और वायुयान की ऊंचाई तेजी से कम होनी शुरू हो गई । भीषण खतरे में पड़ कर उन्हें पर्वतीय प्रदेश में वायुयान को जबरन उतारना पड़ा । ऐसा करते हुए उन्होंने अन्य तीन हवाई कर्मियों के साथ अपनी जान गंवा दी ।

स्क्वाड्रन लीडर श्रीनिवास प्रहलाद देसाई ने आद्योपान्त साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

9. स्क्वाड्रन लीडर कांजीवरम् राजरतनम मोहनराज (5611), टैक्निकल इंजीनियर ।

सन् 1963 के आरम्भ में जम्मू व कश्मीर में परिवहन स्क्वाड्रन में नियुक्त होने पर स्क्वाड्रन लीडर कांजीवरम् राजरतनम मोहनराज ने फ्लाइट इंजीनियर के रूप में उड़ान सेवा आरम्भ की । हालांकि वह काम में नए थे परन्तु उन्होंने संक्रियात्मक उड़ान तथा तकनीक में पारंगत होने में पूरी लगन से काम किया । जम्मू व कश्मीर में स्क्वाड्रन के परिवहन विमान के सुरक्षित संचालन के लिये उनके अनुभव से बहुत-से आंकड़े तैयार किये गये । अपने थोड़े-से सेवा-काल में उन्होंने लगभग 2000 घंटों की उड़ान की जिसमें दुर्गम क्षेत्रों की बहुत-सी उड़ानें शामिल हैं । एक बार यान्त्रिक खराबी के कारण भू-परीक्षण के समय उनके वायुयान को आग लग गई । अपनी निजी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए उन्होंने वायुयान से माल उतरवा लिया और पास में खड़े दूसरे वायुयानों को सुरक्षित स्थान पर हटा दिया । उसके बाद अपने वायुयान के इंजन-पैनल खोल दिये और क्रैंक केस को इंजन तेल से खाली कर वायुयान को जलने से बचा लिया ।

स्क्वाड्रन लीडर कांजीवरम् राजरतनम मोहनराज ने आद्योपान्त साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

10. स्क्वाड्रन लीडर क्षीरोद कृष्ण सेन (4495), जी० डी० (पी०) ।

स्क्वाड्रन लीडर क्षीरोद कृष्ण सेन ने कुल मिलाकर लगभग 3500 घण्टों की उड़ान की है । इसमें रात्रि को एक इंजन वाले वायुयान पर 250 घण्टे और अनुदेशात्मक ड्यूटियों पर 1600 घण्टों की उड़ानें सम्मिलित हैं । 10 मार्च, 1962 को वह एक वायुयान पर अनुदेशात्मक ड्यूटी पर थे । उन्होंने देखा कि सहपक्ष स्थिर हो गए हैं और वायुयान नीचे की ओर चक्कर लेने लगा है । उन्होंने निपुणता से वायुयान को नीचे-ऊपर करके और भारी झटका लगाकर सहपक्ष को मुक्त कर लिया । इस प्रकार उन्होंने वायुयान तथा अमूल्य जानें बचा लीं । इसी प्रकार उन्होंने एक हंटर वायुयान को, जो एक पक्षी के साथ टकरा गया था, बचाने में कमाल की दक्षता दिखाई । एक बार उन्होंने वैम्पायर वायुयान को बचाने में कमाल की व्यावसायिक निपुणता दिखाई । इस वैम्पायर वायुयान का एक दीर्घान्तर उड़ान में पीछे का बेयरिंग खराब हो गया था ।

स्क्वाड्रन लीडर क्षीरोद कृष्ण सेन ने आद्योपान्त व्यावसायिक निपुणता, साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

11. स्क्वाड्रन लीडर राजिन्दर पाल सिंह (4256), जी० डी० (पी०) ।

सन् 1952 से स्क्वाड्रन लीडर राजिन्दर पाल सिंह संक्रियात्मक उड़ान के साथ सक्रिय रूप से सम्बन्धित रहे हैं । उन्हें कुल 6700 घण्टों की उड़ान का श्रेय प्राप्त है । इसमें संक्रियात्मक क्षेत्रों और दुर्गम प्रदेश की प्रतिकूल अवस्थाओं में 2300 घण्टों की उड़ानें सम्मिलित हैं । 1965 में पाकिस्तान के साथ संघर्ष के दौरान उनके स्क्वाड्रन को बहुत अधिक संक्रियात्मक कार्य करने पड़े । अपने स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमाण्डर के रूप में उन्होंने कार्यों को साहसपूर्वक सम्भाला और उन्हें अत्यन्त उत्तम ढंग से पूरा किया । अपनी ड्यूटियों के अतिरिक्त उन्होंने नव-तैनात पायलटों के सम्पर्वितन प्रशिक्षण तथा उनको संक्रियात्मक उड़ानों के लिए छांटने के कार्य में सक्रिय भाग लिया ।

स्क्वाड्रन लीडर राजिन्दर पाल सिंह ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल, साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

12. स्क्वाड्रन लीडर कृष्णमूर्त्ति श्रीनिवासन (5085), जी० डी० (एन०) ।

1963 से स्क्वाड्रन लीडर कृष्णमूर्त्ति श्रीनिवासन एयरक्रू एग्जामिनिंग बोर्ड में मार्ग-निर्देशन परीक्षक लीडर के रूप में सेवा कर रहे हैं । उन्होंने अपने कर्त्तव्य को सदा अत्यन्त उत्तम ढंग से निभाया है तथा सामान्य ड्यूटी के दायित्व के साथ-साथ अतिरिक्त कार्यों को भी निभाया है । उन्होंने 4,800 घण्टे उड़ान की है इसमें विभिन्न किस्मों के परिवहन विमानों पर अनुदेशक के रूप में की गई उड़ानें सम्मिलित हैं । उन्हें मार्ग-निर्देशकों, अनुदेशकों तथा शिष्यों के वर्गीकरण के कार्य पर लगाया गया । स्क्वाड्रन लीडर श्रीनिवासन ने नियत कार्यों को पूरा किया और योजना तथा कठिन मेहनत से वर्गीकरण की व्यवस्था को सुधारा । वर्गीकरण के परिष्कार और उसे बहुत ऊंची प्रतिशतता तक बढ़ाने का श्रेय उन्हीं को है ।

स्क्वाड्रन लीडर कृष्णमूर्त्ति श्रीनिवासन ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल तथा असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

13. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रवीन्द्र सहाय (5861), जी० डी० (पी०) ।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रवीन्द्र सहाय 1961 से असम क्षेत्र में उड़ान कर रहे हैं । उन्होंने 3,800 घण्टों की उड़ान भरी है । इस

स्क्वाड्रन की सेवा अवधि के दौरान नेफा की मायावी घाटियों में उनके तीन बार इंजन खराब हुए । किन्तु प्रत्येक अवसर पर असाधारण उड़ान दक्षता तथा अत्युत्तम संचालन से उन्होंने वायुयान को सुरक्षित उतारने का प्रबंध कर लिया । इस समय वह परिवहन स्क्वाड्रन में हैं । इस स्क्वाड्रन में भी उन्हें दो बार इंजन खराब को हो जाने का अनुभव हुआ, किन्तु उन्होंने अपने वायुयान को सुरक्षित उतारने में सूझबूझ तथा उड़ान दक्षता का प्रदर्शन किया ।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रवीन्द्र सहाय ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल तथा असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

14. फ्लाइट लेफ्टिनेंट तुषार सेन (6006), जी० डी० (पी०) ।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट तुषार सेन अन्तारोधक स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे हैं । इस किस्म के वायुयान पर वह सबसे अधिक अनुभवी पायलटों में से एक हैं और उन्होंने 600 उड़ानें की हैं । कई अवसरों पर उन्हें गम्भीर संकटों का सामना करना पड़ा किन्तु वह हर बार वायुयान को सुरक्षित नीचे ले आए । एक बार उनके वायुयान के सब पहिये बाहर नहीं निकले और जबकि ऐसी स्थिति में किसी भी सामान्य पायलट द्वारा वायुयान को त्याग देना न्याय-संगत होता, वह साहस तथा दृढ़ निश्चय के साथ दो पहियों के सहारे ही वायुयान को नीचे सुरक्षित ले आए । एक अन्य अवसर पर जब उनका देशान्तरीय नियन्त्रण कम ऊंचाई पर खराब हो गया तो उन्होंने सफलतापूर्वक वायुयान को नीचे उतार लिया । 1965 की संक्रियाओं में हवाई रक्षा प्रदान करने के लिए उन्होंने बहुत सी उड़ानें कीं ।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट तुषार सेन ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल, साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

15. 17940 मास्टर वारंट अफसर जेम्ज़ काउट्स लोरिन, फ्लाइट गनर ।

मास्टर वारंट अफसर जेम्ज़ काउट्स लोरिन परिवहन स्क्वाड्रन में कार्य करते रहे हैं । फ्लाइट गनर की ड्यूटियों के आयुध अफसर की अनुपस्थिति में उन्होंने फ्लाइट गनरी नेता की ड्यूटियां सम्भालीं । फ्लाइट गनरी नेता के रूप में काम करते हुए उन्होंने अपने कुशल प्रबन्ध तथा प्रशासकीय योग्यता के गनर की प्रशिक्षण अवस्था तथा संक्रियात्मक स्थिति को ऊंचे स्तर पर रखा । उन्होंने कम से कम समय में सुरक्षित रूप से भरने तथा खाली करने के विभिन्न तकनीकों में भी सुधार शुरू किए । इससे वायुयान को जल्दी-जल्दी निपटाया जा सकता था । उन्होंने 3,500 घंटों की उड़ान की जिसमें 1,000 से अधिक घंटों की उड़ान संक्रियात्मक क्षेत्रों की है ।

मास्टर वारंट अफसर जेम्ज़ काउट्स लोरीन ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

16. 20087 मास्टर सिगनलर सदाशिव पांडुरंग थट्टे, सिगनलर/एयर ।

मास्टर सिगनलर सदाशिव पांडुरंग थट्टे जनवरी 1964 से परिवहन स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे हैं । उन्होंने कुल 6,000 घण्टों से अधिक उड़ान भरी है जिस में जम्मू व कश्मीर तथा नेफा क्षेत्रों की करीब 2400 घण्टों की उड़ान भी सम्मिलित है । फ्लाइट सिगनलर के रूप में उन्होंने स्क्वाड्रन की सफलताओं में पर्याप्त योगदान दिया है ।

मास्टर सिगनलर सदाशिव पांडुरंग थट्टे ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल तथा असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

17. 400372 वारंट अफसर रंगप्पा रंगस्वामी, फ्लाइट गनर ।

वारंट अफसर रंगप्पा रंगस्वामी 1961 से परिवहन स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे हैं । उन्होंने कुल लगभग 4,000 घन्टों की उड़ान की है । इसमें से 2,100 घन्टों की उड़ान जम्मू व कश्मीर तथा नेफा की है । वह उन अगुओं में से एक हैं जिन्हें चीनी आक्रमण के समय चुशूल पर वायुयान द्वारा माल ले जाने के लिए तैनात किया गया था । इसके बाद उन्हें अनेक अवसरों पर अग्रवर्ती क्षेत्रों में वायुयान द्वारा माल ले जाने के लिए तैनात किया गया । 3 जून 1962 को जब वह रसद गिराने के मिशन पर थे तो परिवाहक यंत्र रुक गए थे और रसद गिराना असम्भव हो गया था । माल खतरनाक अवस्था में वायुयान से लटक रहा था जिससे माल उतारने वाले पीछे के दरवाजे बन्द नहीं हो सके । स्थिति का अनुभव करते हुए उन्होंने परिवाहक मोटर को हाथ से चलाया और सारे माल को बाहर गिरा दिया ।

वारंट अफसर रंगप्पा रंगस्वामी ने आद्योपान्त व्यावसायिक कौशल, साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

सं० 36-प्रेज०/68—राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा अथवा साहस के कार्यों के लिए "नौ सेना पदक"/"नेवी मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेंट कमांडर आदिचित्त चाको मेमेन भारतीय नौ सेना ।

2. लेफ्टिनेंट कमांडर अभ्रीक सिंह भारतीय नौ सेना ।

जब आपत-काल के दौरान बम्बई बन्दरगाह में अनिवार्य सेवाएं चालू रखने का कार्य नौ सेना के अधीन किया गया था, उस समय लेफ्टिनेंट कमांडर आदिचित्त चाको मेमेन और लेफ्टिनेंट कमांडर अभ्रीक सिंह बम्बई पोर्ट ट्रस्ट बन्दरगाह के 'अमोल' और 'अंकुश' नामक टगों की क्रमशः कमान कर रहे थे । दोनों टगों में पूर्णतः नौ सेना के कार्मिक तैनात थे और इन अफसरों के निर्देशन में थे । पाकिस्तानी माल वाहक 'इल्यास बख्श' तथा 'एस्सो दुर्हम' नामक 35,000 टन कुल भार तेल के जहाज लंगर घसीट रहे थे और फंस गये थे । दोनों टगों ने इन जहाजों को पुनः जल-प्रवाहित किया, गहरे समुद्र में खींच कर ले गए और उपयुक्त स्थान पर लंगर डाल कर खड़ा कर दिया । यदि टग बचाव के लिए न पहुंचते तो 'एस्सो दुर्हम' का पृष्ठ भाग टूट जाता और परिणामस्वरूप बन्दरगाह का जल भीषण रूप से दूषित किया हो जाता । इन दोनों अफसरों ने बहुत सराहनीय ढंग से अपना कर्त्तव्य निभाया और बम्बई पोर्ट ट्रस्ट के अफसरों से श्रेष्ठतम प्रशंसा प्राप्त की ।

लेफ्टिनेंट कमांडर आदिचित्र चाको मेमेन और लेफ्टिनेंट कमांडर अशोक सिंह ने नौ सेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुकूल साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. लैफ्टिनेन्ट सन्तोष कुमार गुप्ता
भारतीय नौ सेना ।

11 अक्तूबर, 1966 को लेफ्टिनेन्ट संतोष कुमार गुप्ता को एक सी हाक वायुयान में एक अन्तर्रोधन अभ्यास और तत्पश्चात् भारतीय नौ-पोत 'विक्रान्त' पर अवरुद्ध अवतरण के लिए तैनात किया गया । अवतरण करते हुए रोधक तार टूट कर हुक के चारों ओर लिपट गया और वायुयान मुश्किल से पर्याप्त उड़ान चाल में कोणीय डेक के सिरे पर लड़खड़ाने लगा । वायुयान का सारा हुक संयोजन वायुयान से झटके से खिंच गया और समुद्र के पास ही वायुयान असाधारणतया टेढ़ा होकर अपनी ऊंचाई खोने लगा । लेफ्टिनेन्ट गुप्ता ने वायुयान को त्यागने की बजाय जैसाकि सामान्यतया किया जाता है, उसे व्यावसायिक दक्षता के साथ समीपवर्ती हवाई मैदान में उतारा और इस प्रकार मूल्यवान वायुयान को बचाया ।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेंट संतोष कुमार गुप्ता ने साहस और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

4. लेफ्टिनेन्ट भवन दीपक मोहिन्द्रा
भारतीय नौ-सेना ।

3 फरवरी, 1967 को जब भारतीय नौ-सेना पोत 'कारवार' समुद्र में था तो लेफ्टिनेंट भवन दीपक मोहिन्द्रा ने चिमनी से आग की लपटें और धुआं उठते देखा । उन्होंने तुरन्त अग्निशमन दल का संगठन किया । उन्होंने नाविकों को झाग अग्नि-शामक इकट्ठे करने का आदेश दिया और वह स्वयं एक झाग अग्नि-शामक को लेकर इंजन कक्ष में नीचे जा पहुंचे । उन्होंने आग पकड़ने के स्थान और निष्कासन नालिका पर जो उस समय तक आग की लपटों में गिर चुकी थी, अग्नि-शामक का प्रयोग किया। उन्होंने अग्निशमन कार्य का संगठन इतने प्रभावपूर्ण ढंग से किया कि आग लगभग दस ही मिनटों में बुझा दी गई ।

इस कार्य में लेफ्टिनेन्ट भवन दीपक मोहिन्द्रा ने भारतीय नौ-सेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुकूल साहस और पहलशक्ति का परिचय दिया ।

5. लेफ्टिनेन्ट गोपाल दास मुकर्जी
भारतीय नौ-सेना ।

बम्बई बन्दरगाह में आपत काल के दौरान अनिवार्य सेवाएं चालू रखने के लिए जब नौ-सेना को बुलाया गया तो उस समय लेफ्टिनेन्ट गोपाल दास मुकर्जी बम्बई पोर्ट ट्रस्ट के गोदी टग 'राजा' की कमान कर रहे थे । दो अन्य गोदी टगों की सहायता से टग 'राजा' ने अलेग्जेंडर डाक, प्रिंसेस और विक्टोरिया डाक तथा बैलार्ड पियर में प्रत्येक संचलन में सहायता प्रदान की । ज्वार और तूफान की प्रायः कठिन परिस्थितियों में बैलार्ड पियर पर डाक पैसेन्जर जहाजों और अलेग्जैन्ड्रा गोदी के खाद्यान्न जहाजों की सहायता करते हुए उन्होंने सूझबूझ और नौ-कौशल का परिचय दिया ।

लेफ्टिनेन्ट गोपाल दास मुकर्जी ने नौ-कौशल और असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

6. लेफ्टिनेन्ट जार्ज मार्टिस
भारतीय नौ-सेना ।

लेफ्टिनेन्ट जार्ज मार्टिस ने, जो कि योग्य गोताखोर हैं, सफलतापूर्वक अनेक गोता कार्रवाइयों में भाग लिया । अक्तूबर, 1965 में मधद्वीप से दूर सीहाक वायुयान के भग्नावशेषों को ढूंढने के लिये खुले समुद्र में प्रथम गोता कार्रवाई का प्रभार इन्हें सौंपा गया । प्रचंड ज्वार, मंद तरंगों और शून्य दृश्यता के बावजूद यह कार्यवाई सफलतापूर्वक सम्पन्न की गई । यह कार्य विशेषकर कठिन हो गया क्योंकि वायुयान भग्नावशेष के हिस्से बराबर टूटते जा रहे थे और उन्हें निकालना असाध्य हो चला था । उन्होंने 20 घंटे पानी में रह कर सिहर सेन द्वारा पाक जलडमरूमध्य को तैर कर पार किये जाने के दौरान भी महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की ।

इन कार्यवाहियों में लेफ्टिनेन्ट जार्ज मार्टिस ने भारतीय नौ-सेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुकूल व्यावसायिक कुशलता और असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

7. लेफ्टिनेन्ट (पी) हरिदास मेग्जी गोरी
भारतीय नौ-सेना ।

11 मई, 1967 को लेफ्टिनेन्ट हरिदास मेग्जी गोरी अलाउती III हैलिकाप्टर के पाइलट थे । उनको गोआ के निकट ध्वस्त वैम्पायर वायुयान की खोज और बचाव कार्य पर लगाया गया । ध्वंस चेतावनी की आवाज सुनते ही वह तुरन्त खोज और बचाव हैलिकाप्टर में अपने हवाई कार्मिकों सहित उड़े । उन्होंने 50 मील दूर के पहाड़ी क्षेत्र में खोज करनी थी जब कि पहाड़ी चोटियों के ऊपर 100 से 200 फुट तक बादल छाए हुए थे । यद्यपि इस किस्म का हैलिकाप्टर बादलों में उड़ान भरने के लिये उपयुक्त नहीं है तथापि खराब मौसम और अल्प दृश्यता के बावजूद उस क्षेत्र में पहुंच गए और वायुयान को निपुणता से चला कर लेफ्टिनेन्ट ऐंथनी कालियर का पता लगाकर उसे बचा लाए ।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट (पी) हरिदास मेग्जी गोरी ने भारतीय नौ-सेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुकूल साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

8. लेफ्टिनेन्ट (एस० डी०) (बी०) मोहम्मद सालेह चोगले,
भारतीय नौ-सेना

लेफ्टिनेन्ट मोहम्मद सालेह चोगले सन् 1934 में नौ-सेना में सीमैन बाय के रूप में भर्ती हुए और सन् 1944 में चीफ पैटी अफसर नियुक्त किए गए । प्रशिक्षण पोतों स्थापनाओं में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने नए भर्ती किये गये जवानों का प्रशिक्षण और मार्ग-दर्शन किया । सन् 1954 में उन्हें अफसर संवर्ग में कमीशन प्राप्त बोसुन के रैंक में ले लिया गया और बाद में इन्हें कैडट प्रशिक्षण पोत पर अफसर-कैडटों को नौ-कौशल का प्रशिक्षण देने के लिए तैनात किया गया । नौ-सेना, गोदीबाड़ा, बम्बई में सेवा करते हुए उन्होंने असाधारण नौ-कौशल और पोतों के संचलन कार्य में रुझान का परिचय दिया जिसके परिणामस्वरूप नौ-सेना, गोदीबाड़े में विशिष्ट कार्यकुशलता आ गई। नौ-सेना, गोदीबाड़े में पहले जितनी संख्या में पोतों का संचलन हो सकता था उसको दुगना करने के वही जिम्मेदार हैं ।

लेफ्टिनेन्ट मोहम्मद सालेह चोगले ने आद्योपान्त व्यावसायिक दक्षता और असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया है ।

9. लेफ्टिनेन्ट (एस० डी०) (बी०) चन्दी वारू डेविड, भारतीय नौ-सेना ।

लेफ्टिनेन्ट चन्दी वारू डेविड 1944 में नौ-सेना में एक साधारण नौ-सैनिक के रूप में भर्ती हुए । उनकी विशिष्ट योग्यताओं को मानते हुए उन्हें चीफ पेटी अफसर के रूप में पदोन्नत किया गया और बाद में 1959 में बोसुन के रूप में कमीशन दिया गया । नौ-पोत विक्रान्त के जलावतरण के अवसर पर उन्हें प्रतिनियुक्ति करके बर्तानिया भेजा गया । उन्होंने यह सुनिश्चित करने का भरसक प्रयत्न किया कि इस वायुयान वाहक में सभी आवश्यक आधुनिक सुविधाएं हों । हाल ही में उन्होंने बम्बई बन्दरगाह में नौ-पोत विक्रान्त के लिए एक जटिल और विशिष्ट कार्य की योजना बनाई और उसे साकार किया ।

लेफ्टिनेन्ट चन्दी वारू डेविड ने आद्योपान्त व्यावसायिक दक्षता और असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

10. लेफ्टिनेन्ट (एस० डी०) (टी० ए० एस०) जेसीफोर्ड स्मिथ, भारतीय नौ-सेना ।

16 मई, 1967 को जब कमोट्टा द्वीप चक्रवात की लपेट में था तो लेफ्टिनेन्ट जेसीफोर्ड स्मिथ की कमान में नौ-सेना गैरिजन की एक प्लाटून तैनात की गई । लगभग 12 बजे दोपहर उन्होंने देखा कि उस गांव की एक फूस की झोंपड़ी जहां उनकी प्लाटून पड़ाव डाले हुए थी, एक ओर झुक गई है तथा गिरने ही वाली है । वे तत्काल ही एक बचाव दल के साथ उस मौके पर पहुंचे और देखा कि एक महिला और पांच बच्चे झोंपड़ी के अन्दर फंस गए हैं और ठीक इसी बीच झोंपड़ी गिर पड़ी और उसमें आग लग गई । जब दरवाजा खोलने के सभी प्रयत्न निष्फल हो गए तो उन्होंने अपने सैनिकों को झोंपड़ी तोड़ डालने का आदेश दिया । इस शीघ्र कार्रवाई से उन्होंने अन्दर घिरे व्यक्तियों को बचा लिया और आग बुझा दी ।

इस कार्रवाई में, लेफ्टिनेन्ट जेसीफोर्ड स्मिथ ने साहस और पहलशक्ति की प्रवृत्ति का प्रदर्शन किया ।

11. चीफ पैटी अफसर चेलाइल अच्युत कुरुप (ओ० नं० 23568)

चीफ पैटी अफसर चेलाइल अच्युत कुरुप 29 नवम्बर, 1966 को आर्टिलरी सेन्टर, देवलाली में कनिष्ठ नाविकों द्वारा जिन्दा ग्रेनेड अभ्यास के अनुदेशक की ड्यूटी पर थे । जब एक कनिष्ठ नाविक ने सुरक्षा पिन को हटा लिया परन्तु ग्रेनेड को अपनी ही बे में गिरा दिया तो चीफ पैटी अफसर कुरुप ने देखा कि ग्रेनेड का स्ट्राइकर लीवर बाहर आ चुका है और कुछ सैकेंडों में इसका विस्फोट हो जायगा और इससे नाविक की मृत्यु भी हो सकती है । समयानुकूल सूझ से और अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए उन्होंने नाविक को बे से उठा लिया और सुरक्षित स्थान में उसे घसीट लिया । एक सैकेन्ड के अन्दर ही ग्रेनेड फट गया ।

इस कार्रवाई में चीफ पैटी अफसर चेलाइल अच्युत कुरुप ने साहस और समयानुकूल सूझ का परिचय दिया ।

12. चीफ मैकेनिक (इंजीनियर) संग्राम सिंह (गोताखोर प्रथम श्रेणी) (ओ० नं० 36379)

चीफ मैकेनिक (इंजीनियर) संग्राम सिंह नौ-पोत इंडिया में, 1962 में जब वह आरम्भ किया गया था तब से ही गोताखोर दल के वरिष्ठ नाविक रहे हैं और उन्होंने कई गोता कार्रवाइयों में संचालन का दायित्व निभाया है । 1964 में भाखड़ा बांध में मलवा साफ करने की कार्रवाई के लिये इस दल की नियुक्ति की गई इसमें बांध की दीवारों में गड़ी हुई लोहे की शलाकों का काटना भी शामिल था जो बांध के फाटकों को रोक रही थीं और क्षति पहुंचा रही थीं । इसमें 100 फुट की गहराई में बिजली के 400 आम्प्स की ओक्सी-आर्क काटने के उपस्कर का प्रयोग किया जाना था । अनेक कठिनाइयों और अल्प दृश्यता के बावजूद उन्होंने गोता कार्रवाई का नेतृत्व किया । जब अप्रैल 1965 के मध्य से पुनः दल को भाखड़ा बांध में तीन मास के लिये नियुक्त किया गया तो बहुत ही जोखिम की परिस्थिति के बावजूद उन्होंने साहस से और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिलकुल परवाह न करते हुए गोता कार्यवाई की ।

चीफ मैकेनिक (इंजीनियर) संग्राम सिंह ने आद्योपान्त साहस, व्यावसायिक दक्षता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

13. पैटी अफसर हवाई कर्मी जगदीश लाल भाटिया (ओ० नं० 46847)

पैटी अफसर जगदीश लाल भाटिया एक अलाउती III हेलिकाप्टर के विंच आपरेटर और हवाई कर्मी थे, जो 11 मई 1967 को गोआ के निकट ध्वस्त वैम्पायर जेट के दो पाइलटों के बचाव के लिये गये थे । पहले पाइलट को एक बीहड़ और घने जंगल में खोज लिया गया । उन्होंने लम्बे वृक्षों के बीच बहुत संकरे स्थान में बचाव रस्सी को लटकाया और पाइलट को 80 फुट की ऊंचाई से ऊपर खींच लिया । 12 मई 1967 को उन्होंने ऐसी ही कठिन अवस्थाओं में दूसरे पाइलट को भी बचा लिया । जनवरी 1965 में उन्होंने एक ऐसा ही बचाव कार्य किया, जिसकी प्रशंसा नौ-सेनाध्यक्ष द्वारा की गई थी ।

पैटी अफसर हवाई कर्मी जगदीश लाल भाटिया ने आद्योपान्त साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

14. लीडिंग नाविक चालेचेरी लोनप्पन देवास्से (ओ० नं० 13061)

13 अप्रैल, 1966 की रात्रि को नौ-सेना पोत 'हाथी' एक युद्ध-अभ्यास टार्गेट को खींच रहा था । खराब मौसम में बम्बई से दूर टार्गेट की खींच को जब कम किया जा रहा था तो बंधन तार जहाज के नोदक से उलझ गया । जब टार्गेट को जहाज के खूंटों से ऐंठकर बांधा जाने लगा तो बांधने वाले तार एक के बाद एक टूटने लगे । युद्ध-अभ्यास टार्गेट स्थान से अलग हट गया और जहाज को क्षति पहुंचाते हुए भयानक रूप से टकराने लगा । अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए लीडिंग नाविक देवास्से घने अन्धकार और खराब मौसम में टार्गेट तक तैर कर गए और सारी रात बंधन-तारों को बदलते रहे । पुनः 27 नवम्बर 1966 को जब जहाज मद्रास में था और चक्रवात की चेतावनी दी जा चुकी थी, जहाज को एक सुरक्षित स्थान पर हटा ले जाना आवश्यक हो गया । जब टगों को बांधने वाले रस्से कई मौकों पर अलग हो गए तो लीडिंग नाविक देवास्से ने व्यक्तिगत खतरा उठाकर उन्हें कई बार बांधा ।

लीडिंग नाविक चालेचेरी लोनप्पन देवास्से में आद्योपान्त साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

15. लीडिंग यांत्रिक इंजीनियर राम सिंह (ओ० नं० 66909)

24 अगस्त, 1967 को नौ-सेना पोत 'व्यास' पूर्ण शक्ति परीक्षण के लिए समुद्र में गया । लगभग 11 बजकर 40 मिन्ट पर अग्र इंजन कक्ष में इंजन एग्जास्ट मैनीफोल्ड के समीप भयंकर आग लग गई जो बहुत तेजी से फैल गई । लीडिंग यांत्रिक इंजीनियर राम सिंह, जो के-3 जनित्र की निगरानी कर रहे थे, उन छः व्यक्तियों में से थे जो कक्ष के भीतर थे । हालांकि सभी व्यक्तियों को कक्ष छोड़ देने के लिए कहा गया परन्तु लीडिंग यांत्रिक इंजीनियर राम सिंह वहीं रहे और आग बुझाने का प्रयत्न करते रहे । यह समझ कर कि आग पर काबू पाना सम्भव नहीं है उन्होंने जनित्र को बन्द करने का प्रयत्न किया लेकिन उन्होंने देखा कि ज्योंही वह लीवर चलाने वाले थे, मोटर रुक गई । उनकी साहसिक कार्रवाई से प्रेरित होकर अन्य सदस्य आग से जूझ गए और गम्भीर क्षति पहुंचने से पूर्व उसे बुझा दिया ।

लीडिंग यांत्रिक इंजीनियर राम सिंह ने आद्योपान्त साहस और पहलशक्ति का परिचय दिया ।

दिनांक 28 मई 1968

सं० 33-प्रेज/68—राष्ट्रपति केन्द्रीय आरक्षित पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्नि शमन सेवा पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री गुरनाम सिंह
जमादार,
22वीं बटालियन,
केन्द्रीय आरक्षित पुलिस,
जालन्धर ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

3 अगस्त, 1967 को लगभग एक दर्जन पाकिस्तानी घुसपैठियों ने जम्मु तथा काश्मीर में ट्रेंड्रिनोट के समीप युद्ध विराम रेखा पार की । जमादार गुरनाम सिंह उन्हें रोकने के लिये सात सिपाहियों की एक गश्ती टुकड़ी लेकर निकल पड़े । पुलिस दल को देखते ही घुसपैठिये भाग खड़े हुए । जब जमादार गुरनाम सिंह एक घुसपैठिये का पीछा कर रहे थे तो दल के अन्य सदस्य शेष घुसपैठियों का पीछा करने लगे । युद्ध विराम रेखा के दूसरी ओर स्थित पाकिस्तानी चौकी से गोलीबारी के खतरे की परवाह किये बिना जमादार गुरनाम सिंह ने उस घुसपैठिये का पीछा किया, उसे मार गिराया और फिर चौकी पर वापस ले जाने के लिए उसे कंधे पर उठा कर चल पड़ा । लौटते समय उसके पांव एक भूमिगत सुरंग पर पड़ गये जिसके विस्फोट के परिणामस्वरूप उसका दाहिना पांव बुरी तरह से घायल हो गया । इस दुर्घटना का लाभ उठाते हुये पाकिस्तानी घुसपैठिये ने स्वयं को छुड़ा लिया और भागने की चेष्टा की। घायल होने पर भी, जमादार गुरनाम सिंह ने अपनी राइफल उठाई और भागते हुये पाकिस्तानी घुसपैठिये पर गोली चलाकर उसे मार गिराया । जब पुलिस चौकी के अन्य सदस्य जमादार की सहायता के लिये आये तो उसने उनको अन्य पाकिस्तानी घुसपैठियों को पकड़ने के लिये जाने का संकेत दिया ।

जमादार गुरनाम सिंह ने इस मुठभेड़ में महान साहस, अनुकरणीय नेतृत्व तथा वीरता का प्रदर्शन किया ।

2. यह पदक राष्ट्रपति के पुलिस तथा अग्नि शमन सेवा पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 3 अगस्त, 1967 से दिया जायेगा ।

व० जे० मोर, राष्ट्रपति के
उप सचिव

योजना आयोग

शिक्षा सलाहकार पैनल

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 25 मई 1968

सं० यो० आ०/1 (32)/67-शिक्षा—योजना आयोग ने

(क) शिक्षा योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करने;

(ख) सामाजिक आवश्यकताओं और अर्थव्यवस्थाओं की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए 15-20 वर्ष की अवधि के लिए विकास की आवश्यकताओं का व्यापक प्राक्कलन करने; और

(ग) अप्रैल 1969 से आरम्भ होने वाली चौथी योजना के उद्देश्यों, लक्ष्यों और नीति के विशेष संदर्भ में दीर्घकालीन शिक्षा कार्यक्रमों को तैयार करने के बारे में केन्द्रीय और राज्य सरकारों को सलाह देने के लिए एक शिक्षा सलाहकार पैनल स्थापित किया है ।

2. पैनल का गठन इस प्रकार होगा :—

1. डा० बी० डी० नागचौधरी, सदस्य, योजना आयोग । — अध्यक्ष
2. श्री शांति मय आइच, कोयलाखान मजदूर कांग्रेस, बंगाल होटल, पो० आ० आसनसोल, जिला बर्दवान (पश्चिम बंगाल) । — सदस्य
3. श्री टी० एस० अविनाशिलिंगम निदेशक, श्री रामकृष्ण मिशन विद्यालय, पो० आ० कोयम्बटूर जिला, मद्रास राज्य । — ,,
4. श्री ए० ई० टी० बैरो, संसद्सदस्य, 13-ए फीरोजशाह रोड, नई दिल्ली । — ,,
5. डा० आर० के० मान, अध्यक्ष, अखिल भारतीय विश्वविद्यालय एवं कालेज अध्यापक संघ, हस्तिनापुर कालेज, मोतीबाग, नई दिल्ली-3 । — ,,
6. श्री वी० एम० भिडे, संयुक्त सचिव, योजना आयोग, नई दिल्ली । — ,,
7. श्री अनिल बोरडिया, अतिरिक्त निदेशक-शिक्षा, बीकानेर, राजस्थान । — ,,

8. श्री के० सी० चाको, निदेशक, तकनीकी शिक्षा, केरल सरकार, त्रिवेंद्रम । सदस्य
9. श्री जी० के० चंदीरामानी, सचिव, शिक्षा मन्त्रालय, नई दिल्ली । ,,
10. श्री एल० एस० चन्द्रकान्त, संयुक्त शिक्षा सलाहकार, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली । ,,
11. श्रीमती एफ० चौधरी, शिक्षा निदेशक, मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल । ,,
12. श्री शाहजी छत्रपति, कोल्हापुर महाराज न्यू पैलेस, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) । ,,
13. डा० बी० दत्ता, सचिव, शिक्षा विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, राईटर्स बिल्डिंग, कलकत्ता । ,,
14. डा० सी० डी० देशपांडे, अतिरिक्त शिक्षा निदेशक, महाराष्ट्र सरकार, पूना । ,,
15. प्रो० आर० एन० डोगरा, निदेशक, इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टैक्नोलाजी, महरौली रोड, नई दिल्ली । ,,
16. श्री ई० डब्ल्यू० फ्रैंकलिन, कार्यकारी सचिव, अखिल भारतीय शिक्षण संस्था महापरिषद्, 16-ए/10, वेस्टर्न एक्सटेंशन एरिया, करौलबाग, नई दिल्ली-5 । ,,
17. डा० पी० बी० गजेंद्रगडकर, उप-कुलपति, बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई । ,,
18. डा० ओ० पी० गौतम, उपनिदेशक, सामान्य (शिक्षा), भारतीय कृषि अनुसंधान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली । ,,
19. डा० जहांगीर, जे० घौंडी, टाटा आयर्न एंड स्टील कम्पनी, जमशेदपुर, बिहार । ,,
20. डा० पी० एस० गिल, निदेशक, केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन चण्डीगढ़ । ,,
21. श्री ए० एच० हेमराजानी, निदेशक, शिक्षा विभाग, योजना आयोग, नई दिल्ली । ,,
22. श्री जी० जगतपति, संयुक्त सचिव (जन-शक्ति निदेशालय), गृह कार्य मन्त्रालय, साउथ, ब्लाक, नई दिल्ली । ,,
23. डा० वी० एस० झा, 'शांति कुटीर' 868, राइट टाउन, जबलपुर (मध्य प्रदेश) । ,,
24. डा० ए० सी० जोशी, उप-कुलपति बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ० प्र०)। ,,
25. श्री पी० एन० कृपाल, भूतपूर्व सचिव, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली । ,,
26. प्रो० दौलतसिंह कोठारी, अध्यक्ष, विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली । ,,
27. डा० एच० एन० कुंजरू, अध्यक्ष, सर्वेंट्स आफ इंडिया सोसायटी, सप्रू हाउस, बारा खम्बा रोड, नई दिल्ली । सदस्य
28. डा० हरबन्स लाल, अर्थ सलाहकार, योजना आयोग, नई दिल्ली । ,,
29. श्री एस० लाल, अध्यक्ष, अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षक संघ, एफ-4, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-16 । ,,
30. श्री एस० के० मल्लिक, महानिदेशक, एवं प्रशिक्षण, नई दिल्ली । ,,
31. श्री एल० मरियाप्रगासम, महामंत्री, भारतीय शिक्षक संघ, रोबर्टसनपेट, राजा अन्नामलाइपुरम, मद्रास-28 । ,,
32. प्रो० एम० वी० माथुर, उप-कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर । ,,
33. डा० एस० एन० मेहरोत्रा, उप-सचिव, विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ । ,,
34. डा० मोहन सिंह मेहता, विद्या भवन संस्था, सेवा मन्दिर, उदयपुर, राजस्थान । ,,
35. डा० एस० मिश्र, उप-कुलपति, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर । ,,
36. डा० एस० के० मित्रा, संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली । ,,
37. डा० ए० लक्ष्मणस्वामी मुदालियर, उप-कुलपति, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास । ,,
38. प्रो० एच० एन० मुखर्जी, संसद सदस्य, 21, रकाबगंज रोड, नई दिल्ली-1 । ,,
39. श्री टी० मूथियन, तकनीकी शिक्षा निदेशक, मद्रास सरकार, मद्रास । ,,
40. श्री जे० पी० नाइक, सलाहकार, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली । ,,
41. डा० के० सी० नाइक, उप-कुलपति, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलौर । ,,
42. कुमारी एस० पनन्दिकर, अध्यक्ष, राष्ट्रीय नारी शिक्षा परिषद्, 8, मार्डन हाउस, फर्स्ट रोड, खार, बम्बई-5 । ,,
43. डा० एम० डी० पाल, स्कूल शिक्षा निदेशक, मद्रास सरकार, मद्रास । ,,
44. श्री हीरा लाल पटवारी, अध्यक्ष, अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ, पो० आ० टांगला, असम । ,,
45. श्री एस० सी० राजखोआ, शिक्षा निदेशक, असम सरकार, शिलांग । ,,
46. श्री जी० रामचन्द्रन, सचिव, गांधी स्मारक निधि, राजघाट, नई दिल्ली । ,,

47. श्री एस० आर० रामामूर्त्ति, सचिव, शिक्षा विभाग, आन्ध्र प्रदेश सरकार, हैदराबाद । सदस्य

48. डा० डी० एस० रेड्डी, उप-कुलपति, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद । ,,

49. श्री पी० एस० रेडकर, भीमराव वाड़ी, ठाकुरद्वार, बम्बई-2 । ,,

50. डा० के० जी० सैय्यदन, निदेशक, एशियाई शिक्षा आयोजन तथा प्रशासन संस्थान, इन्द्रप्रस्थ इस्टेट, नई दिल्ली-1 । ,,

51. डा० विक्रम ए० साराभाई, अध्यक्ष, परमाणु शक्ति आयोग, अपोलो पायर-रोड, बेलार्ड एस्टेट, बम्बई । ,,

52. श्री एम० टी० शुक्ल, वस्त्र मिल मजदूर संघ, गांधी मजदूर सेवालय, भाद्रा, अहमदाबाद । ,,

53. डा० पी० डी० शुक्ल, शिक्षा मन्त्रालय, नई दिल्ली । ,,

54. श्री द्वारकासिंह, एकेडेमिक रजिस्ट्रार, बिहार टैक्स्ट बुक पब्लिशिंग कारपोरेशन लि०, पटना-1, बिहार । ,,

55. प्रो० एम० एल० सोंधी, संसद-सदस्य, 14, मीना बाग, नई दिल्ली । ,,

56. प्रो० एम० एन० श्रीनिवास, समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली । ,,

57. डा० ए० आर० वर्मा, निदेशक, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली । ,,

58. श्री डी० पी० नायर, वरिष्ठ विशेषज्ञ (शिक्षा), योजना आयोग, नई दिल्ली । सचिव

59. डा० एस० एन० सराफ, निदेशक (शिक्षा) योजना आयोग, नई दिल्ली । सहयोगी सचिव

3. किसी विशेष समस्या के अध्ययन की सुविधा के लिए पैनल उप-समितियां गठित कर सकता है तथा सदस्यों को सहयोजित कर सकता है ।

4. पैनल की बैठक जितनी बार आवश्यक हो नई दिल्ली अथवा किसी अन्य स्थान पर हो सकती है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति भारत के राजपत्र में प्रकाशित की जाये और सभी सम्बन्धितों को भेजी जाये ।

भैरव दत्त पाण्डे, सचिव
योजना आयोग

औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य मंत्रालय

(औद्योगिक विकास विभाग)

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 18 मई 1968

सं० प्रो० को० 28(2)/65—सरकारी क्षेत्र के उद्योगों की राष्ट्रपति पुरस्कार सम्बन्धी समिति ने जिसकी स्थापना भारत सरकार के संकल्प संख्या प्रो०को० 28(1)/62 दिनांक 17 नवम्बर, 1962 के द्वारा की गई थी, भारत सरकार के संकल्प संख्या प्रो० को० 28(2)/65, दिनांक 7 जनवरी, 1966 (भारत के राजपत्र में 22 जनवरी, 1966 को प्रकाशित) में अधिसूचित उपक्रमों द्वारा 1964-65 में किये गये कार्य पर विचार किया गया और यह निश्चय किया गया है कि इण्डियन टेलीफोन इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, बंगलौर को चांदी और तांबे की एक शील्ड प्रदान की जाय । इस समिति ने यह भी निश्चय किया है कि वर्ष 1964-65 में किसी भी उपक्रम को कोई योग्यता प्रमाण-पत्र (सौंबा प्लेट) अथवा सम्मान (पार्चमेंट पेपर) दिये जाने की आवश्यकता नहीं है ।

आदेश

यह आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक-एक प्रति समिति के सभी सदस्यों तथा सम्बन्धित उपक्रमों को भेजी जाये ।

यह आदेश भी दिया जाता है कि संकल्प को सर्वसाधारण की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित कराया जाये ।

न० ज० कामत, संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 3 मई 1968

सं० एल० आई० (3)-17(40)/66—भारत सरकार ने सभी किस्मों के कागज के मूल्यों से तत्काल नियंत्रण हटा देने का निश्चय किया है । अतः एतद्द्वारा कागज (सभी किस्मों) के मूल्यों से संबंधित भारत सरकार के निम्नलिखित संकल्प रद्द किये जाते हैं :—

1. भूतपूर्व वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय संकल्प सी० एच० (1)—41(79)/59 दिनांक 27-11-1959 ।
2. भूतपूर्व वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय संकल्प संख्या सी० एच० (1)-17(130)/60 दिनांक 21-6-1962 ।

सी० बालासुब्रह्मण्यम, उप-सचिव

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय

(कृषि विभाग)

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 22 मई 1968

सं० 6-26/67-सी०सी०-2—भारत सरकार के संकल्प संख्या 6-3/65-रिआर्ग (सी०सी०) (एडम०) दिनांक 19 मई, 1966 के अनुसार भारतीय कपास विकास परिषद् को पुनर्गठित करने का निश्चय किया गया है । पुनर्गठित परिषद् में निम्नलिखित शामिल होंगे :—

(1) अध्यक्ष — उत्पादकों के प्रतिनिधियों में से एक को भारत सरकार द्वारा

नामजद किया जाना ।

(2) उपाध्यक्ष — सचिव, कृषि विभाग, भारत सरकार ।

(3) सदस्य

(क) केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के प्रतिनिधि

(1) निम्नलिखित राज्य सरकारें अपनी सरकार के कृषि विभाग का एक-एक प्रतिनिधि नामजद करेगी ।

(1) महाराष्ट्र
(2) गुजरात
(3) पंजाब
(4) हरियाणा
(5) मैसूर
(6) मद्रास
(7) मध्य प्रदेश
(8) आन्ध्र प्रदेश
(9) राजस्थान

(2) योजना आयोग का एक प्रतिनिधि

(3) कृषि आयुक्त, भारत सरकार ।

(4) टैक्सटाईल कमिश्नर, वाणिज्य मंत्रालय

(5) महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् अथवा उनका प्रतिनिधि ।

(ख) उत्पादकों के प्रतिनिधि

(1) उत्पादकों का एक-एक प्रतिनिधि निम्नलिखित सरकारों द्वारा नामजद किया जाना ।

(1) महाराष्ट्र
(2) गुजरात
(3) पंजाब
(4) हरियाणा
(5) मैसूर
(6) मद्रास
(7) मध्य प्रदेश
(8) आन्ध्र प्रदेश
(9) राजस्थान

(2) भारत सरकार द्वारा उत्पादकों का एक प्रतिनिधि नामजद किया जाना ।

(ग) उद्योग के प्रतिनिधि — इन्डियन कपास मिल्ज फैडरेशन के तीन प्रतिनिधि ।

(घ) ट्रेड के प्रतिनिधि — ईस्ट इण्डिया कपास एसोसियेशन के तीन प्रतिनिधि ।

(ङ) संसद सदस्य — संसदीय मामलों के विभाग की सलाह से भारत सरकार द्वारा नामजद किये गये दो संसद् सदस्य

(1) श्री पी० एस० पाटिल
(2) श्री ए० एस० सहगल

(च) समय-समय पर भारत सरकार द्वारा ऐसे अतिरिक्त व्यक्तियों को नामजद किया जा सकता है जिनका प्रतिनिधि परिषद् में पहले नहीं है ।

(4) सदस्य सचिव — निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, कपास विकास, खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय (कृषि विभाग) ।

(5) प्रेक्षक — (ये लोग परिषद् के सदस्य नहीं होंगे किन्तु परिषद् के कार्यों में सहायता देने के लिए उन्हें नित्य आमंत्रित किया जाएगा ।)

(1) कृषि विपणन सलाहकार, खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय (कृषि विभाग) ।

(2) संयुक्त सचिव (वित्त), खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय से सम्बन्धित ।

(3) अर्थ तथा सांख्यिकीय सलाहकार, खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय (कृषि विभाग) ।

(4) वनस्पति रक्षा सलाहकार, भारत सरकार ।

(5) राष्ट्रीय बीज निगम का एक प्रतिनिधि ।

(6) निदेशक, औद्योगिक अनुसन्धान प्रयोगशाला (कपास) माटुंगा, बम्बई ।

(7) उपायुक्त (निर्यात वृद्धि) कृषि विभाग ।

2. परिषद् सलाहकार निकाय होगी और उसके निम्नलिखित कार्य होंगे :—

(1) केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों द्वारा बनाए गये कपास विकास कार्यक्रम पर समय-समय पर विचार करना ।

(2) निर्धारित लक्ष्यों के सम्बन्ध में कपास विकास की प्रगति पर विचार तथा पुनर्विलोकन करना ।

(3) जहां आवश्यकता हो वहां कपास कार्यक्रमों/योजनाओं की गति तीव्र करने के लिये उपायों की सिफारिश करना ।

(4) कपास विपणन तथा व्यापार की जिसमें मूल्य नीति भी शामिल है, समस्याओं पर पुनर्विचार करना और सुधार के लिये सुझाव देना; और

(5) अन्य कार्य जो भारत सरकार द्वारा समय-समय पर परिषद् को दिये जायें ।

3. जिन क्षेत्रों में कपास उगाई जाती है उनमें, व्यापार तथा उद्योग के महत्वपूर्ण केन्द्रों में आवधिक रूप से परिषद् की बैठकें हुआ करेंगी और परिषद् भारत सरकार को अपनी सिफारिशें प्रस्तुत किया करेंगी ।

4. परिषद् के सदस्यों की अवधि 3 वर्षों के लिए होगी । फिर भी यदि आवश्यकता होगी तो भारत सरकार उसे बढ़ा सकती है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति समस्त राज्य सरकारों, संघ प्रशासित क्षेत्र और सरकार के समस्त मन्त्रालय, योजना आयोग, मंत्रिमण्डल सचिवालय, प्रधान-मन्त्री सचिवालय, लोक सभा तथा राज्य सभा सचिवालय को भेजी जाए ।

2. यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत के राजपत्र में सामान्य सूचना के लिए प्रकाशित किया जाए ।

एस० जे० माजुमदार, अतिरिक्त सचिव

शिक्षा मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 16 मई 1968

सं० एफ० 1-8/67-वाई०एस० 2—शिक्षा मंत्रालय की समसंख्यक अधिसूचना दिनांक 18-10-1967 के क्रम में

श्री जी० के० चन्दोरामाणी,
सचिव,
शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

को

श्री प्रेम कृपाल के स्थान पर, जो अब रिटायर हो गए हैं, इसी समय से और 17 अक्तूबर, 1968 तक अखिल भारतीय खेल परिषद् के एक सदस्य के रूप में नामजद किया जाता है ।

रोशन लाल आनन्द, अवर सचिव

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 28 मई 1968

सं० एफ० 1-2/67-एच०-1—इस मंत्रालय के संकल्प संख्या एफ० 1-12/65-एच०-1 तारीख 4 नवम्बर, 1965 में आंशिक संशोधन करते हुये उपरोक्त संकल्प में निम्नलिखित संशोधन करने का निश्चय किया जाता है ।

यह संशोधन तुरन्त लागू हो जायेंगे ।

(1) **वर्तमान पैरा 4 के स्थान पर निम्नलिखित पैरा प्रतिस्थापित किया जाये**

"4. **कार्यकारिणी उप-समिति**

अपने विभिन्न कार्यों को प्रभावपूर्ण रूप से चलाने के लिये समिति एक कार्यकारिणी उप-समिति नियुक्त कर सकती है। साधारणतः इस उप-समिति में 15 सदस्य रहेंगे, जो अध्यक्ष द्वारा नामित किये जायेंगे । समिति के उपाध्यक्ष, उप-समिति के अध्यक्ष होंगे । उप-समिति को समिति के सदस्यों में से अथवा बाहर से ऐसे व्यक्तियों को सहयोजित करने का अधिकार होगा, जिन्हें हिन्दी के प्रचार और विकास की समस्याओं के सम्बन्ध में विशेष जानकारी और अनुभव प्राप्त हो ।"

(2) **उपरोक्त संकल्प में निम्नलिखित नया पैरा 5 जोड़ दिया जाये** :—

"5. **'कोरम'**—समिति/उपसमिति की बैठकों के लिये कोरम् समिति/उप-समिति के कुल सदस्यों का एक-तिहाई होगा ।"

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सभी राज्य सरकारों तथा संघीय प्रशासनों, प्रधान मंत्री सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, योजना आयोग, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा सचिवालय, राष्ट्रपति सचिवालय तथा भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा विभागों को भेज दी जाये ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प भारत के राजपत्र में सर्वसाधारण की सूचना के लिये प्रकाशित किया जाये ।

निरंकार स्वरूप भटनागर, अनु-सचिव

परिवहन तथा नौवहन मंत्रालय

(परिवहन पक्ष)

संस्ताव

नई दिल्ली, दिनांक 20 अप्रैल 1968

पत्तम

सं० 7-पी०जी० (26)/67—भारत सरकार को मारमोगाव पत्तन की 1966-67 की प्रशासनिक रिपोर्ट मिल गई है । रिपोर्ट की मुख्य बातों की समीक्षा नीचे की जाती है :—

(1) **वित्तीय स्थिति**—1966-67 में मारमोगाव पत्तन का कुल राजस्व 197,76 लाख (कनहारी से प्राप्तियों सहित) था । 1965-66 में यह संख्या 181.29 लाख रुपये थी । आमदनी में वृद्धि घाट शुल्क, रेलभाड़ा और अतिरिक्त तथा अधिक उद्ग्रहण से बढ़े अर्जन के कारण था ।

विचाराधीन वर्ष में 127·90 लाख रुपये का व्यय हुआ । 1965-66 में यह संख्या 160·36 लाख रुपये थी । पिछले वर्ष 1962 से 1965 तक की पूर्ति करने वाले नये अह्रासन निधि में चार्ज किये गये 50.57 लाख रुपये के व्यय के अधीन असाधारण वृद्धि हो गई थी । इसके अतिरिक्त 1966-67 में भी व्यय में कुछ वृद्धि हुई । इसका कारण, पत्तन कर्मचारियों को कुछ अतिरिक्त सुविधायें देना, निकर्षण के रख-रखाव पर अधिक व्यय और अलगमेनी बैंक से पत्तन द्वारा लिये गये ऋण पर मूलधन तथा ब्याज की अदायगी के लिये की गई अधिक व्यवस्था थी ।

(2) **यातायात**—1966-67 में पत्तन में 8,085,696 टन के यातायात को धरा उठाई की गई । 1965-66 में यह संख्या 7,860,102 टन थी । विचाराधीन वर्ष में पत्तन में अभी तक उसके

इतिहास में सर्वाधिक यातायात की धरा उठाई गई। यातायात संख्याओं का विभाजन इस प्रकार है :—

	1965-66	1966-67
	टन	टन
आयात .	239,127	396,764
निर्यात . .	7,620,975	7,688,932

निर्यात में 7,652,080 टन खनिज पदार्थ और 36,852 टन सामान्य माल था।

(3) **नौवहन**—1966-67 में पत्तन में आने वाले पोतों की संख्या 776 थी। जो 6,606,952 कुल टन भार के थे। पिछले वर्ष यह संख्या 834 पोत तथा 6,573,447 कुल टन भार थी।

(4) **सवारी यातायात**—1966-67 में मारमोगांव पत्तन में 10,242 व्यक्ति जहाज पर चढ़े और 10,743 व्यक्ति उतरे। पिछले वर्ष की ये सख्यायें 10,492 चढ़े और 10,954 उतरे थी।

(5) **पूंजीगत निर्माण कार्य** : 1966-67 में पूंजीगत लेखों में 47·69 लाख रुपये का व्यय किया गया। कुछ पूंजीगत निर्माण-कार्य जो किये गये और उन पर किया गया व्यय नीचे सूचित किया जाता है :—

निर्माण कार्य का नाम	व्यय (रुपये लाख में)
हारबर टग की प्राप्ति . . .	23.41
पत्तन क्षेत्र में एक छादन का निर्माण .	5.26
तिरते पाइपलाइन का उत्पादन . .	2.26
मोबाइल क्रेन की खरीद . . .	2.09
अतिरिक्त मूरिंग बोया की प्राप्ति . .	1.69
नये प्रशासनिक भवन का निर्माण .	1.72
पत्तन क्षेत्र में घाटी में फर्श लगाना .	1.20

6. **कल्याण कार्य**—मंडल ने कल्याणकारी निधि विनियमन अंगीकृत किये हैं। इसमें 50,000 रु० से अधिक न बढ़ने वाले निधि की स्थापना की व्यवस्था है। इससे छात्रवृत्तियों के देने खेलकूद तथा अन्य मनोरंजक सुविधाओं पर और कर्मचारियों को सुयोग्य कार्य करने पर पारितोषिक दिया जा सकता है। पोर्ट ट्रस्ट द्वारा इस वर्ष जो कल्याणकारी कार्य किये गये उनमें खेलकूद तथा मनोरंजक सुविधायें, दो कान्टीनों का चलाया जाना, और एक पत्तन कर्मचारी उपभोक्ता सहकारी समिति शामिल है।

7. **श्रम स्थिति**—वर्ष भर पत्तन में श्रम स्थिति सन्तोषजनक रही।

8. मारमोगाव पोर्ट ट्रस्ट ने उपयोगी कार्य किया और सरकार 1966–67 में उसके द्वारा किये गये कार्य की सराहना करती है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इसकी एक प्रतिलिपि समस्त संबद्ध को भेज दी जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संस्तव सामान्य सूचनार्थ भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाये।

जे० एस० झाला, संयुक्त सचिव

सिंचाई व बिजली मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 9 मई 1968

संकल्प

सं० बी–2-35(10)/63—इस मंत्रालय के संकल्प वि० 2–35 (10)/634 दिनांक 12 मार्च, 1964 द्वारा स्थापित उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय बिजली बोर्ड में केन्द्रीय बिजली प्राधिकार और असम राज्य बिजली बोर्ड को प्रतिनिधित्व देने के उद्देश्य से यह फैसला किया गया है कि संकल्प सं० बी–2–35(10)/63, दिनांकित 5 मार्च, 1964 द्वारा संशोधित संकल्प के पैरा 2 में निम्नलिखित को छटी और सातवीं इंदराज के रूप में रख लिया जाए—

(6) केन्द्रीय बिजली प्राधिकार का एक प्रतिनिधि

(7) अध्यक्ष, असम राज्य बिजली बोर्ड

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को असम, नागालैण्ड, त्रिपुरा और नेफा मणिपुर की सरकारों; अध्यक्ष, असम राज्य बिजली बोर्ड, शिलांग; भारत सरकार के मंत्रालयों, प्रधान मंत्री का सचिवालय, राष्ट्रपति के सचिव, योजना आयोग और भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक को भेज दिया जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प आम जानकारी के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाये।

के० पी० मधानी, सचिव

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

नई दिल्ली-1, दिनांक 25 मई 1968

सं० 24/3/68–एफ०पी०—समय समय पर संशोधित, भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के संकल्प संख्या 1/29/58–एफ० पी० तारीख 5 फरवरी, 1959 के अनुसार, केन्द्रीय सरकार ने श्री रमन के० देसाई और श्रीमती एम० नसरुल्ला को 1 जून, 1968 से दो वर्ष की अवधि के लिये फिल्म सलाहकार बोर्ड बम्बई का सदस्य फिर से नामजद किया है।

2. श्रीमती टी० बी० दहेजिआ की फिल्म सलाहकार बोर्ड के सदस्य के रूप में अवधि 31 मार्च, 1968 को समाप्त हो जायेगी।

बानू राम अग्रवाल, अवर सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1968

No. 34-*Pres.*/68.—The President is pleased to approve the award of the "SENA MEDAL"/"ARMY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Major JAGWANT SINGH BATH (IC-14468), Parachute Regiment.

On the 12th March 1967, Major Jagwant Singh Bath was commanding a company of the Parachute Regiment engaged in operation against hostiles in the Mizo District. On receiving information that a large number of hostiles were operating in the area of Vuakmual, he, with his company, crossed a river which was in spate and by the evening established a firm base in a thick jungle on the south-east of Vuakmual. At about 2000 hours, the two forward platoons cordoned off the village and Major Bath with the third platoon moved into the village. The hostiles opened fire. Despite this, Major Bath successfully charged the hostiles killing four of them and capturing three together with a large quantity of arms, ammunition and documents.

Throughout, Major Jagwant Singh Bath displayed courage and leadership.

2. Major BALWANT SINGH BISHT (IC-14736), Parachute Regiment.

On 23rd April 1967, Major Balwant Singh Bisht was commanding a company column of Parachute Regiment which carried out a special Helicopter borne operation in Assam. On the 27th April 1967, he was informed by Battalion Headquarters that a Mizo hostile leader was reported to be in a hideout in the vicinity of Darlung which was 16 miles away and was ordered to capture him. On the night of 29th/30th April 1967, Major Bisht moved forward under the cover of darkness and raided Darlung and an adjacent village. On getting a clue from a boy, he set out with six men and a guide, and after covering a difficult track when the guide expressed ignorance, he continued the search for further clues. Suddenly he came across an opening where he discovered two well concealed huts. Major Bisht and his men raided the huts and captured all the occupants.

Throughout, Major Balwant Singh Bisht displayed courage determination and leadership.

3. Major SHEHKHOGIN KAPGEN (IC-14430), Assam Regiment.

On the 21st January 1967, Major Kapgen was given the task of apprehending three deserters who had taken away some arms and ammunition. Earlier, information was received that the deserters had been seen near Naksai Khola (Assam) on the previous night, but afterwards disappeared in the thick jungle. Major Kapgen, with his patrol, entered the jungle, and seeing the deserters under a big bush about 30 yards away, charged them instantaneously. His men followed him. When the deserters tried to take up their rifles and hand grenades, Major Kapgen shouted a warning to them that they should surrender or else he would shoot them. Finding no other alternative, the deserters surrendered.

Throughout, Major Shehkhogin Kapgen displayed courage, determination and leadership.

4. Major OM PRAKASH SABHARWAL (IC-7311), Parachute Regiment.

Major Om Prakash Sabharwal was detailed as the column commander during two operations between 20th June and 28th July 1967, which were designed to capture certain Mizo hostile leaders who were reported to be in the area. During one of the operations, although the leader was not present in the village, the officer collected information and quickly raided a hostile hide-out and captured some important documents. On the 25th June, 1967, after a gruelling march with his column, he got information about hostile concentration in an area. At 0200 hours, he raided the hostile position and took the hostiles completely by surprise. During the encounter that followed he led a Section personally while rest of the column surrounded the village. In this action, one hostile was killed and one wounded and three others captured along with some arms and ammunition. He gathered information from the captured hostiles and moved forward to raid the hostiles' camp and their Battalion Headquarters. When one of his sub-column was crossing a river, the hostiles opened LMG Fire and used hand grenades from a dominating feature. Realising that his men were badly caught, he decided to assault the hostile position. He led his men under heavy fire and broke the ambush forcing the hostiles to run away. During the other operation, when he and his platoon reached within 500 yards of the hostiles' Headquarters, he was fired upon by LMG and rifles. Undaunted, he led his men and engaged the hostiles who fled leaving behind two dead and some arms and ammunition and cash.

Throughout, Major Om Prakash Sabharwal displayed courage, determination and leadership.

5. Major BISHAN SINGH (JC-14513), Grenadiers.

On the 11th September 1967, Major Bishan Singh was detailed to supervise the strengthening of the wire at Nathu La by our troops. He deployed the escort/protection and fence wire laying parties properly. The work was started at the appointed hour. The Chinese forces fired rifles shots to frighten our men. Major Bishan Singh carried on with his task even when the enemy opened fire with their heavy support weapons. Having made sure that the work on the left flank was going satisfactorily, he came to help the right side. He was however pinned down by enemy MMG fire along with the rest of the men. He, with other two officers, kept a steady pressure of fire and grenades on the Chinese forces. While throwing a grenade, he was hit by LMG fire in the right arm and one leg and by splinters in the other leg. Despite this, he fired an LMG magazine before withdrawing.

Throughout, Major Bishan Singh displayed courage, devotion to duty and leadership.

6. Captain SURAJ PRAKASH BAKSHI (EC-51998), Bihar Regiment.

At 0300 hours on the 9th June 1967, Captain Suraj Prakash Bakshi, who was commanding a company of Bihar Regiment, established a base near a village in the Mizo Hills area. With a platoon, he moved forward to search the huts on the outskirts of the village where armed hostiles were reported to be staying. When the party reached within 50 yards of the huts, about 20 hostiles rushed out firing as they emerged. Disregarding his own safety, Captain Bakshi led his platoon and charged the hostiles. He shot three hostiles and bayonetted one. His men shot five more hostiles and captured the remaining eleven. In the encounter, Captain Bakshi was hit by a hostile bullet in the head.

In this action, Captain Suraj Prakash Bakshi displayed courage and leadership.

7. Captain NACHHATTAR SINGH BURN (EC-56255), Artillery.

Captain Nachhattar Singh Burn was performing the duties of Observation Post Officer from 11th September to 13th September 1967 at Nathu La. When ordered to engaged the attacking Chinese forces, he brought down quick and accurate fire on them silencing their small arms fire and destroying some of their bunkers. Soon his position became a target of Chinese artillery and infantry fire. Although his technical assistant was killed, his radio operator wounded and his radio set was knocked out, Captain Burn moved from rock to rock using his line communication and continued to direct fire on the Chinese forces inflicting heavy casualties on them. From 11th September to 13th September 1967, Captain Burn stayed at his post facing severe weather and intense fire from the Chinese forces. For three days, he worked day and night and brought down accurate artillery fire on the Chinese forces inflicting heavy casualties which enabled our troops to hold out against the sudden and unprovoked attack.

Throughout, Captain Nachhattar Singh Burn displayed courage and devotion to duty.

8. Captain PALACKAPILLIL PAILY PAILY (M-30738), Army Medical Corps.

On the 11th September 1967, when the Chinese forces suddenly opened fire at Nathu La, Captain Palackapillil Paily Paily was ordered to establish an Advance Dressing Station to provide medical cover to troops engaged in fighting in

the forward area. In the face of intense fire from Chinese forces, he quickly established the Dressing Station at a height of 14,000 ft. Although the Dressing Station was under constant intense shelling from 11th September to 14th September 1967 he and his men worked round the clock rendering aid to all battle casualties and thus saved many valuable lives.

Throughout, Captain Palackapillil Paily Paily displayed courage and devotion to duty.

9. Captain SATISH KUMAR SOOD (EC-52620), Artillery.

On the 12th September 1967, at Nathu La, when an additional Observation Post Officer was required to be sent to Camel's Back, a feature 14,973 feet high, Captain Satish Kumar Sood volunteered to go knowing fully well that the route to the feature as also the feature itself, was under heavy shelling by the Chinese artillery and infantry mortars. Disregarding bitter cold and intense shelling, he reached the feature on the night of 12th/13th September 1967. When at dawn he started engaging targets, his position came under more intense shelling from the Chinese forces. Undaunted, he moved from rock to rock directing fire on the Chinese forces. Although his radio and line communications were frequently disrupted, he quickly restored contact. Throughout the 13th September 1967, Captain Sood directed accurate artillery fire on the Chinese gun and mortar positions as a result of which at least three of the Chinese artillery mortars were put out of action, their lines of communication were paralysed and they suffered heavy casualties.

Throughout, Captain Satish Kumar Sood displayed courage, determination and devotion to duty.

10. Second Lieutenant NAVEEN CHANDRA GUPTA (IC-16951), Signals.

On the 11th September 1967, 2nd/Lt. Naveen Chandra Gupta accompanied his Brigade Commander at Nathu La (Central Bump) when the wire laying operation was being carried out along the watershed. At about 0530 hours, the Chinese forces suddenly opened fire as a result of which communication lines between Centre Bump anud the South Shoulder were disrupted Line parties sent to restore the communication lines could not succeed owing to heavy shelling. Since it was absolutely necessary to restore communication lines, 2nd/Lt. Gupta, in complete disregard of his personal safety, proceeded towards South Shoulder and after crawling and running in difficult mountaineous terrain reached the destination and got all the information from the post where only the platoon commander and one more man were left. While at the post, he engaged the Chinese forces with hand grenades and helped the platoon commander to recover a wounded officer. After delivering the Brigade Commander's encouraging message and a radio set, he returned to Centre Bump.

Throughout, 2nd/Lt. Naveen Chandra Gupta displayed courage and devotion to duty.

11. Second Lieutenant JASBEER SINGH (IC-16293), Engineers.

On the 9th July 1966, Second Lieutenant Jasbeer Singh who was commanding a platoon of a Field Company of an Engineer Regiment, was ordered, to lift about 1,150 mines from an old mine-field. Despite many hazards, he, with his platoon, started work on 11th July 1966 and had cleared a number of mines when a Sapper reported that he could not trace a blast mine. 2nd/Lt. Jasbeer Singh immediately went forward to detect it. While he was trying to locate the mine, he suddenly stumbled over a stone and fell down on a mine which exploded. His right foot up to ankle was blown off and his right eye ripped open. Realising the danger to his men of coming into the mine-field in a hurry, he crawled for about 10 yards, before his men could rescue him. Inspite of his injuries he continued to encourage his men to go ahead with the work.

In this assignment, Second Lieutenant Jasbeer Singh displayed courage and devotion to duty.

12. JC-36079 Naib Subedar MAHADEO JADHAV, Parachute Regiment.

On the 26th June 1967, when village Chhawrtwi was raided, Naib Subedar Mahadeo Jadhav was in command of the leading platoon which came under LMG fire from a hostile sentry. He quickly moved his platoon to cut off the hostiles and led a section to assault them, as a result of which one hostile with a sten gun and 197 rounds of ammunition was captured. Again on the 27th July 1967, his column was ambushed by hostiles. Unmindful of his personal safety, he led his men in the assault and himself lobbed a grenade on the hostiles LMG killing one. This act was instrumental in liquidating the hostile position.

Throughout, Naib Subedar Mahadeo Jadhav displayed courage and determination.

13. JC-39184 Naib Subedar RAGHAVA PRASAD PANDEY, Rajput Regiment. (*Posthumous*)

On the 11th September 1967, Naib Subedar Raghava Prasad Pandey was Platoon Commander of a Company which was detailed as a protection party for the engineers who were laying a wire fence on the North Shoulder at Nathu La. All of a sudden, the Chinese forces opend fire from the front as well as from the flanks. Disregarding his personal safety, Naib Subedar Pandey charged the Chinese position in front of him and bayonetted two Chinese soldiers. While trying to reach the Chinese LMG bunker which was causing heavy casualties to our troops out in the open, he was hit by a burst of Chinese LMG as a result of which he died on the spot.

In this connection, Naib Subedar Raghava Prasad Pandey displayed courage and determination.

14. 2640287 Havildar BRIJ LAL, Grenadiers.

On the 11th September 1967, Havildar Brij Lal was the Commander of a recoilless gun detachment which was located between Sebula and the Centre Bump area of Nathu La. When the Chinese forces started firing with recoilless guns on our troops who were laying wire, he stuck to his post and successfully destroyed two Chinese bunkers. Again on the 13th September 1967, he successfully silenced a Chinese machine gun and demolished a bunker on the South Shoulder. On the same day he was assigned another difficult task which he accomplished successfully.

In this action, Havildar Brij Lal displayed courage and determination.

15. 4146934 Havildar KURA RAM Kumaon Regiment.

On the 30th August 1966, during the course of glacier training at High Altitude Warfare School in Jammu & Kashmir one "rope" consisting of four officers and one JCO, led by a Havildar Instructor, fell into a crevasse about 200 feet deep. Havildar Kura Ram, who was leading another group of trainees behind, learnt about the incident. He unroped himself and rushed to the spot. On reaching the crevasse he found that another Instructor had already gone down for rescue operations. He immediately slid down the dangerous crevasse and joined his colleague in the rescue operation. Both of them continued the rescue operations in a temperature well below freezing point and saved two officers who were alive and also brought up the dead bodies of the other members.

Throughout, Havildar Kura Ram displayed courage and initiative.

16. 6251686 Lance Naik M. G. EZHUTHACHAN, Signals.

On the 15th September 1965, Lance Naik M. G. Ezhuthachan was carrying service mail in a vehicle driven by himself from Jammu to Pathankot. When he was about 15 miles from Jammu, the vehicle was strafed by Pakistani aircraft as a result of which he received serious injuries in the neck, chest and stomach which were bleeding profusely. His vehicle was also damaged and became unserviceable. Although he was advised by all present to go to hospital, he did not leave the place and insisted on remaining with the mail bags and taking them personally to Pathankot. Ultimately, he was taken by the GOC Punjab and Himachal Pradesh who happened to pass that way in his staff car to Pathankot where he handed over the mail and then went to hospital for treatment.

Throughout, Lance Naik M. G. Ezhuthachan displayed courage and devotion to duty.

17. 1431121 Sapper KARNAIL SINGH, Engineers (*Posthumous*)

On the 11th September 1967, Sapper Karnail Singh, who was in a detachment of engineers engaged in laying a wire fence at Nathu La, was assigned a difficult task. Despite a bayonet injury caused by the Chinese soldiers who were interfering by using physical force he continued to try to accomplish of the assigned task. Later, when the Chinese forces used automatic and mortar fire, he continued his work undeterred by a shell splinter injury in his arm. While doing so, he was hit by a bullet. He crawled for a distance to pick up his rifle, but succumbed to his injuries.

In this action, Sapper Karnail Singh displayed courage and determination.

18. 13656135 Paratrooper JOKHU SINGH, Parachute Regiment.

On the 26th June 1967, when village Chhawrtwi was raided, Paratrooper Jokhu Singh was in a section which came under fire from a Mizo hostile sentry. He rushed in the direction of the hostile fire and killed the sentry and took his rifle. This action resulted in a portion of the village being cleared of the hostiles. Again on the 27th June 1967, when an assault was launched on the Headquarters of the hostiles, Paratrooper Jokhu Singh rushed forward ahead of his section and lobbed a grenade at the hostile LMG post. This daring action resulted in silencing the hostile LMG and successful completion of the task assigned to his section.

Throughout, Paratrooper Jokhu Singh displayed courage and initiative.

No. 35-*Pres.*/68.—The President is pleased to approve the award of the "VAYU SENA MEDAL"/"AIR FORCE MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Group Captain JAGDISH RAJ BHASIN (3591) G.D. (P).

Group Captain (then Wing Commander) Jagdish Raj Bhasin was in command of a Squadron from April 1966 to May 1967. He was entrusted with the stewardship of the Squadron at the time of its re-equipment with a new type of aircraft. The primary task of the Squadron was to train the pilots to use this new type of aircraft. For this purpose he, despite many difficulties, marshalled all the resources at his disposal with utmost speed and carried out the task successfully by working about twelve hours a day. During his stay in the Squadron, he introduced effective steps for flight safety.

Throughout, Group Captain Jagdish Raj Bhasin displayed professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

2. Group Captain JASPAL SINGH (2451) GD(P).

As Commander of a Bomber Squadron, Group Captain Jaspal Singh led his Squadron in a commendable manner winning many a laurel in inter-Squadron armament competitions. For five years he was connected with the Flight Safety Organisation at Air Headquarters and by his organising ability and sound technical knowledge implemented various plans. As Commander of a large multi-role station, he has successfully tackled many complex operational, training, maintenance and administrative problems. He has flown over 4000 hours without a blemish.

Throughout, Group Captain Jaspal Singh displayed professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

3. Wing Commander JASMER SINGH DHANOA (4428) GD(P).

Wing Commander Jasmer Singh Dhanoa has recently taken over command of a Transport Squadron. He undertook various missions in the eastern region from 1953 to 1955 and, thereafter, served as an Instructor in a transport training wing and as Flight Commander in the VIP flights of Air Headquarters Communication Squadron. He has an accident free record of over 6000 hours of flying.

Throughout, Wing Commander Jasmer Singh Dhanoa displayed professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

4. Wing Commander MOHAN INDER SINGH (4219) G.D.(P).

Wing Commander Mohan Inder Singh has been intimately associated with the introduction of the HS-748 aircraft in operations with the Air Force. The level of efficiency at which the present force of HS-748 aircraft operates in the squadron is mainly due to his professional skill, foresight and good planning. While he was in command of this squadron, he effected smooth changeover to modern turbo-jet aircraft for VIP communication duties. He ensured the highest standard of flight safety required in the communication squadron for air transportation of VIPs. He has a total of about 6000 flying hours to his credit.

Throughout, Wing Commander Mohan Inder Singh displayed professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

5. Win Commander MALCOLM SHIRLEY DUNDAS WOLLEN, (3641) G.D.(P).

Wing Commander Malcolm Shirley Dundas Wollen was in command of an Interceptor Squadron re-equipped with a new type of aircraft. The squadron, besides its role of interception, had to undertake conversion training of a number of pilots. Wing Commander Wollen with great perseverence and fortitude fulfilled the task by continuously supervising the unit. The syllabus of training prepared by him for conversion of his squadron personnel has been accepted in the Air Force as a standard syllabus. During the conflict with Pakistan, Wing Commander Wollen, undertook several operational sorties both by day and night for intercepting enemy aircraft despite various limitations and adverse conditions.

Throughout, Wing Commander Malcolm Shirley Dundas Wollen displayed professional skill and exceptional devotion to duty.

6. Squadron Leader ERIC LIONEL ALLEN, (4582) G.D.(P).

When both the Squadron Leader and the Flight Commander of a Squadron were killed in a fatal flying accident in July 1965, Squadron Leader Eric Lionel Allen took over the command of the Squadron. By working from dawn to dusk and at times even during the night, he successfully completed the task of operational training of the pilots in the Squadron, within a very short time. During the conflict with Pakistan in 1965, he undertook several difficult missions. In addition to the duties of Squadron Commander, he performed the duties of Officer-in-Charge of Flying at an airfield for a period of 15 months.

Throughout, Squadron Leader Eric Lionel Allen displayed courage and devotion to duty.

7. Squadron Leader NARINDER SINGH ARORA, (4983) G.D.(P).

Squadron Leader Narinder Singh Arora has been on the strength of a transport squadron since October 1966. He has flown a total of 4600 hours including 2200 hours over Jammu and Kashmir and NEFA areas. He has always volunteered for any new tasks that were assigned to the squadron and accomplished them. On the 30th April 1960, when his aircraft had an engine failure during a sortie in the Ladakh area, he took proper corrective action immediately and brought the aircraft safely to base without any damage to Service property or injury to the crew.

Throughout, Squadron Leader Narinder Singh Arora displayed professional skill and exceptional devotion to duty.

8. Squadron Leader SHRINIVAS PRAHLAD DESAI, (5005) G.D.(P). (*Posthumous*)

Squadron Leader Shrinivas Prahlad Desai was posted to a squadron in June 1967, which was called upon to undertake the difficult task of air maintenance for the North East Frontier Agency. He, along with a handful of his colleagues, carried out the pioneering work of classifying all the dropping zones despite adverse weather conditions. He flew 104 hours on operational tasks of air maintenance and also trained many pilots in supply dropping techniques. On the 27th

July 1967, Squadron Leader Desai was called upon to undertake a supply dropping mission to an isolated post located in an extremely difficult mountainous region at a height of 10,700 feet. He undertook this sortie with full knowledge of the difficulties involved. After carrying out a most accurate pin-point drop in the first run over the tiny dropping zone, he made another circuit for subsequent drop when the port engine of the aircraft suddenly failed and the aircraft started losing height rapidly. Faced with great danger, he had to crash land the aircraft in the mountainous terrain and in doing so lost his life along with three other aircrew.

Throughout, Squadron Leader Shrinivas Prahlad Desai displayed courage and devotion to duty.

9. Squadron Leader CONJEEVARAM RAJARATNAM MOHANRAJ,
(5611) Technical/Engineer.

Squadron Leader Conjeevaram Rajaratnam Mohanraj took up flying as a Flight Engineer in early 1963 when he was posted to a transport squadron in Jammu and Kashmir. Although new to his job, he worked steadfastly to master operational flying and techniques and from his experience a number of data were formulated for the safe operation of the transport aircraft of the squadron in Jammu and Kashmir. During his short career, he has flown about 2000 hours which include a number of sorties in hazardous areas. Once, his aircraft caught fire during ground testing due to mechanical defects. With complete disregard of his personal safety he got the cargo in the aircraft unloaded and also the other aircraft parked nearby removed to a safe place and, thereafter, opened the engine panels of his aircraft and saved it from burning by draining out engine oil from the crank case.

Throughout, Squadron Leader Conjeevaram Rajaratnam Mohanraj displayed courage and devotion to duty.

10. Squadron Leader KSHIRODE KRISHNA SEN
(4495) G.D. (P).

Squadron Leader Kshirode Krishna Sen has flown a total of nearly 3500 hours which includes 250 hours on single engined aircraft during night and 1600 hours on instructional duties. On the 10th March 1962, while an instructional duties on an aircraft, he found that the ailerons had jammed and the aircraft went into a spiral. He skilfully managed to get the ailerons free by inducing excessive skid and rocking motion and this saved the aircraft and precious lives. He displayed similar remarkable skill in saving a Hunter aircraft when it was hit by a bird. Once again, he showed remarkable professional skill in saving a Vampire aircraft when there was rear bearing failure during a cross country flight.

Throughout, Squadron Leader Kshirode Krishna Sen displayed professional skill courage and devotion to duty.

11. Squadron Leader RAJINDER PAL SINGH
(4256) G.D.(P).

Squadron Leader Rajinder Pal Singh has been actively associated with operational flying since 1952. He has to his credit a total of 6700 flying hours which included 2300 hours in operational areas and over difficult terrain under adverse weather conditions. During the conflict with Pakistan in 1965, his squadron was faced with enormously increased operational tasks. As a flight commander of his squadron, he undertook the tasks courageously and completed them exceptionally well. In addition to his own duties, he took an active part in carrying out the conversion- training of newly posted pilots and screening them for operational flights.

Throughout, Squadron Leader Rajinder Pal Singh displayed professional skill, courage and devotion to duty.

12. Squadron Leader KRISHNAMURTI SRINIVASAN
(5085) G.D. (N).

Squadron Leader Krishnamurti Srinivasan has been on the strength of the Aircrew Examining Board as Navigation Examiner Leader since 1963. He has all along discharged his duties exceptionally well and has always met the demands for additional tasks beyond the normal call of duty. He has flown 4800 hours including those as an instructor on different types of transport aircraft. He was engaged in the task of categorisation of navigators, instructors and pupils. Squadron Leader Srinivasan implemented the set tasks and enhanced the categorisation state by careful planning and hard work. He has been responsible for re-orientation of categorisation and increasing it to a very high percentage.

Throughout, Squadron Leader Krishnamurti Srinivasan displayed professional skill and exceptional devotion to duty.

13. Flight Lieutenant RAVINDRA SAHAI
(5861) G.D. (P).

Flight Lieutenant Ravindra Sahai has been flying in the Assam area since 1961. He has flown a total of 3800 hours. During the period of his service with a squadron, he had three engine failures in the trecherous valleys of NEFA, but on each occasion he managed to land the aircraft safely by exceptional flying skill and masterly handling. At present he is in a transport squadron. In this squadron also he experienced two engine failures, but he displayed presence of mind and flying skill in safe landing his aircraft.

Throughout, Flight Lieutenant Ravindra Sahai displayed professional skill and exceptional devotion to duty.

14. Flight Lieutenant TUSHAR SEN
(6006) G.D. (P).

Flight Lieutenant Tushar Sen has been serving with an interceptor Squadron. He is one of the most experienced pilots on this type of aircraft and has flown 600 sorties. On many occasions, he had to cope wth serious emergencies but each time he brought the aircraft down safely. Once, when all wheels of his aircraft did not come down, and when any normal pilot would have been justified in abandoning the aircraft in such a situation, he, with courage and determination, brought the aircraft back safely on two wheels. On another occasion, when his longitudinal control failed at a low height, he successfully landed the aircraft. He flew a number of sorties in 1965 operations to provide air defence.

Throughout, Flight Lieutenant Tushar Sen displayed professional, skill courage and devoion to duty.

15. 17940 Master Warrant Officer JAMES COUTTS LORINE
Flight Gunner.

Master Warrant Officer James Coutts Lorine has been serving with a Transport Squadron. In the absence of the armament officer for flight gunnery duties, he also took up the duties of the flight gunnery leader. While working as a flight gunnery leader he kept the training state and the operational status of the gunners at a high degree of efficiency with his efficient management and administrative ability. He also took the initiative in improving various techniques of safe loading and unloading in the shortest possible time resulting in quick turn round of aircraft. He has flown 3500 hours out of which more than 1000 hours have been in operational areas.

Throughout, Master Warrant Officer James Coutts Lorine displayed professional skill and exceeptional devotion to duty.

16. 20087 Master Signaller SADASHIV PANDURANG THATTE,
Signaller/Air.

Master Signaller Sadashiv Pandurang Thattee has been working with a Transport Squadron since January 1964. He has flown a total of more than 6000 hours out of which about 2400 hours have been in Jammu and Kashmir and NEFA areas. As a Flight Signaller, he has made a considerable contribution towards the achievements of the Squadron.

Throughout, Master Signaller Sadashiv Pandurang Thatte displayed professional skill and exceptional devotion to duty.

17. 400372 Warrant Officer RANGAPPA RANGASWAMI,
Flight Gunner.

Warrant Officer Rangappa Rangaswamy has been serving with a Transport Squadron since 1961. He has flown a total of about 4000 hours out of which about 2100 hours were in Jammu and Kashmir and NEFA. He was one of the pioneers who were detailed to airlift cargo to Chushul during the Chinese aggression. He has subsequently been employed on many occasions to airlift cargo to forward areas. On the 3rd June 1962, while on a supply dropping mission the transporters got stuck and rendered the supply drop impossible. The cargo which was hanging precariously from the aircraft prevented closing of the rear cargo doors. Realising the situation, he operated the transporter motor manually and ejected the whole load.

Throughout, Warrant Officer Rangappa Rangaswamy displayed professional skill, courage and devotion to duty.

No. 36-Pres./68.—The President is pleased to approve the award of the "NAO SENA MEDAL"/"NAVY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Lieutenant Commander ADICHITRA CHACKO MAMMEN, Indian Navy.
2. Lieutenant Commander AMRIK SINGH, Indian Navy.

Lieutenant Commander Adichitra Chacko Mammen and Lieutenant Commander Amrik Singh were in command of Bombay Port Trust Harbour tugs 'AMOL' and 'ANKUSH', respectively, when the Navy was called upon to maintain essential services in the Port of Bombay during an emergency. Both the tugs, entirely manned by Naval personnel and directed by these officers, helped in refloating, towing to deep water and anchoring in position the Pakistan Freighter, 'ILLYAS BAKSH' and 'ESSO DURHAM', the 35000 Tons Dead Weight Oil Tanker which had dragged their anchors and were aground. Had the tugs not come to the rescue, 'ESSO DURHAM' would have broken its back resulting in serious contamination of the harbour. Both the officers performed their task in a most creditable manner and earned the highest praise from the Bombay Port Trust Officials.

Throughout, Lieutenant Commander Adichitra Chacko Mammen and Lieutenant Commander Amrik Singh displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

3. Lieutenant SANTOSH KUMAR GUPTA, Indian Navy.

On the 11th October 1966, Lieutenant Santosh Kumar Gupta was detailed to carry out an interception exercise, followed by an arrested landing on board I.N.S. VIKRANT in a Seahawk aircraft. On landing, the arrester wire parted, wrapped itself round the hook, and as the aircraft staggered off the end of the angled deck with barely adequate flying speed, the whole hook assembly got wrenched of the aircraft which assumed an unusually steep-banked attitude close to the water and started losing height. Instead of abandoning the aircraft, which would have normally been done, Lieutenant Gupta landed it as a nearby airfield with great professional skill and thus saved the valuable aircraft.

Throughout, Lieutenant Santosh Kumar Gupta displayed courage and determination.

4. Lieutenant BHAWAN DEEPAK MOHINDRA, Indian Navy.

On the 3rd February 1967, when I.N.S. KARWAR was at sea, Lieutenant Bhawan Deepak Mohindra on noticing flames and smoke in the funnel immediately organised a fire fighting party. He ordered the sailers to assemble foam type extinguishers, and himself rushed down the engine room with one extinguisher and applied the foam at the source of fire and also at the exhaust pipe which had by then fallen off in flames. He organised the fire fighting so effectively that the out break was extinguished within about ten minutes.

In this action, Lieutenant Bhawan Deepak Mohindra displayed courage and initiative in the best traditions of the Indian Navy.

5. Lieutenant GOPAL DAS MUKERJI, Indian Navy.

Lieutenant Gopal Das Mukerji was in command of Bombay Port Trust Dock tug 'RAJA' when Navy was called upon to maintain essential services in the Port of Bombay during an emergency. The tug 'RAJA', assisted by two other Dock tugs, helped in all the movements in Alexandra Docks as well as Princes and Voctoria Docks and at Ballard Pier. He displayed initiative and seamanship while assisting Mail Passenger Liners at Ballard Pier and food grain tankers from the Alexandra Docks, often in difficult conditions of tide and wind.

Throughout, Lieutenant Gopal Das Mukerji displayed seamanship and exceptional devotion to duty.

6. Lieutenant GEORGE MARTIS, Indian Navy.

Lieutenant George Martis, a qualified diver, has taken part in several diving operations successfully. In October 1965, he was in charge of the first diving operation in the open sea to recover the wreckage of Seahawk aircraft off Madh Island. The operations were carried out successfully despite strong tides, moderate swell and nil visibility. It became particularly difficult as bits of wreckage of the aircraft kept breaking off making stropping difficult. He also rendered valuable assistance during the swim across the Palk Strait by Shri Mihir Sen by staying in the water for about 20 hours.

Throughout, Lieutenant George Martis displayed professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

7. Lieutenant (P) HARI DAS MEGJI GORI, Indian Navy.

Lieutenant Hari Das Megji Gori was the pilot of an Alouette III helicopter employed on search and rescue duties on the 11th May 1967 when a Vampire aircraft crashed near Goa. Immediately on hearing the crash alarm, he was air borne in the Search and Rescue Helicopter with his aircrewman and proceeded to search in an area 50 miles away in hilly terrain with cloud base between 100 to 200 feet above the hill tops at the time. Though this type of helicopter is not suitable for flying in the cloud, he, despite bad weather and poor visibility, reached the area and after manouvring the aircraft skilfully located Lieutenant Anthony Carlier and rescued him.

Throughout, Lieutenant (P) Hari Das Megji Gori displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

8. Lieutenant (SD) (B) MOHAMMED SALEH CHOGLE, Indian Navy.

Lieutenant Mohammed Saleh Chogle entered Naval service as a seaman boy in 1934 and was appointed a Chief Petty Officer in 1944. During his tenure in the training ships/ establishments he trained and guided young new entrants. He was taken in the Officer cadre in the rank of Commissioned Boatswain in 1954, and subsequently posted to a Cadet Training Ship to impart training to officer cadets in seamanship. During his service in the Naval Dockyard, Bombay, he has displayed exceptional seamanship and aptitude for the work of movement of ships resulting in marked efficiency in the Naval Dockyard. He was responsible for carrying out twice the number of ship movements in the Naval Dockyard than had been possible hitherto.

Throughout Lieutenant Mohammed Saleh Chogle displayed professional skill and exceptional devotion to duty.

9. Lieutenant (SD) (B) CHANDY VAROO DAVID, Indian Navy.

Lieutenant Chandy Varoo David joined the Navy as an ordinary seaman in 1944. In recognition of his outstanding abilities, he was promoted as Chief Petty Officer and subsequently as Commissioned Boatswain in 1959. He was sent on deputation to the United Kingdom at the time of commissioning of I.N.S. VIKRANT. He took great care to ensure that the aircraft carrier had all modern facilities required. Recently, he planned and executed a difficult and specialised job for I.N.S. VIKRANT in Bombay Harbour.

Throughout, Lieutenant Chandy Varoo David displayed professional skill and exceptional devotion to duty.

10. Lieutenant (SD) (TAS) JESEEFORD SMITH, Indian Navy.

On the 16th May 1967, when Kamotra Island was in the grip of a cyclone, a platoon of the Naval Garrison was deployed under the command of Lieutenant Jeseeford Smith. At about 1200 hours, he noticed that a thatched hutment in the village where the platoon had camped had tilted over to one side and was about to collapse. He immediately reached the site with a rescue party and found that a woman and five children were trapped inside the hut which, in the meantime, collapsed and caught fire. When all efforts to open the door failed, he directed his men to break-open the hut. By this prompt action, he rescued the persons trapped inside and extinguished the fire.

In this action, Lieutenant Jesseford Smith displayed courage and initiative.

11. Chief Petty Officer CHELAYIL ACHUTHA KURUP, (O. No. 23568).

On the 29th November 1966, Chief Petty Officer Chelayil Achutha Kurup was the instructor on duty for live grenade

practice by junior sailors at the Artillery Centre, Devlali. When a junior sailor removed the safety pin, but dropped the grenade in his own bay, Chief Petty Officer Kurup noticed that the striker lever of the grenade had come out and that it would explode in a few seconds and this might kill the sailor. With presence of mind, and disregarding his own safety, he picked up the sailor from the bay and dragged him to safety and within a second the grenade went off.

In this action, Chief Petty Officer Chelayil Achutha Kurup displayed courage and presence of mind.

12. Chief Mechanic (Engineer) SANGRAM SINGH, (Diver 1 Class) (O. No. 36379).

Chief Mechanic (Engineer) Sangram Singh has been the senior sailor of the diving team in I.N.S. INDIA since its inception in 1962 and has been responsible for conducting several diving operations. In 1964, the team was detailed for operations at Bhakra Dam for clearing debris. This included cutting steel rods embedded in dam walls which were restricting and damaging the dam gates, which involved the use of oxy-arc cutting equipment with 400 amps of current at a depth of 100 feet. Despite many difficulties and poor visibility, he led the diving operation. Again, when the team was employed in Bhakra Dam for three months from the middle of April 1965, he, despite extremely hazardous conditions, undertook diving operations with courage and in complete disregard of his personal safety.

Throughout, Chief Mechanic (Engineer) Sangram Singh displayed courage, professional skill and devotion to duty.

13. Petty Officer Aircrewman JAGDISH LAL BHATIA, (O. No. 46847).

Petty Officer Jagdish Lal Bhatia was the aircrewman and which operator of an Alouette III helicopter which proceeded to rescue two pilots of a Vampire aircraft which crashed near Goa on the 11th May 1967. The first pilot was located in thick tropical jungle. He lowered the rescue strap through a very narrow gap between tall trees and hoisted the pilot from a height of 80 feet. On the 12th May 1967, he rescued the second pilot under similar difficult conditions. In January 1965, he performed a similar rescue operation, for which he was commended by the Chief of the Naval Staff.

Throughout,, Petty Officer Aircrewman Jagdish Lal Bhatia displayed courage and devotion to duty.

14. Leading Seaman CHALECHERY LONAPPAN DEVASSEY. (O. No. 13061).

On the night of 13th April 1966, INS HATHI was towing a battle practice target. While shortening the tow of the target off Bombay in rough weather, the tow wire fouled the ships propellor. When the target was warped alongside the bollards, the securing wires gave way one after the other. The target drifted and started hitting the ship with tremendous force causing damage. Disregarding personal safety, Leading Seaman Devassey swam across to the target in pitch darkness in rough weather conditions and kept changing the securing wires the whole night. Again on the 27th November 1966, when the ship was at Madras, and there was a cyclone warning, the ship was required to be shifted to a sheltered berth. When the tugs' securing lines parted on many occasions, Leading Seaman Devassey secured the lines many times at personal risk.

Throughout, Leading Seaman Chalechery Lonappan Devassey displayed courage and devotion to duty.

15. Leading Mechanical Engineer RAM SINGH, (O. No. 66909).

On the 24th August 1967, INS BEAS proceeded to sea for full power trials. At about 1140 hours, a maior fire broke out in the vicinity of the Engine exhaust manifold in the forward engine room which spread very rapidly. Leading Mechanical Engineer Ram Singh, who was the K3 generator watch-keeper, was among the six persons who were inside the room. Although the individuals were asked to vacate the compartment, Leading Mechanical Engineer Ram Singh remained behind, and attempted to fight the fire. Realising that it was not possible to control the fire, he attempted to stop the generator but found that the motor stopped just as he was about to operate the lever. Being encouraged by his courageous action, the other members fought the fire and extinguished it before it could cause serious damage.

Throughout, Leading Mechanical Engineer Ram Singh displayed courage and initiative.

The 28th May 1968

No. 33-*Pres./68.*—The President is pleased to award the President's Police and Fire Services Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Central Reserve Police :—

Name of the officer and rank

Shri Gurnam Singh,
Jemadar,
22nd Battalion,
Central Reserve Police,
Jullundur.

Statement of services for which the decoration has been awarded

On the 3rd August, 1967 about a dozen Pakistani infiltrators crossed the cease fire line near Tetrinot in Jammu and Kashmir. Jemadar Gurnam Singh took out a patrol of seven men to intercept them. On seeing the Police party the intruders made off. Jemadar Gurnam Singh followed one of the intruders while other members of the party followed the remaining infiltrators. Unmindful of the danger of fire from the Pakistan post on the opposite side of the cease fire line. Jemadar Gurnam Singh chased the intruder, knocked him down and then lifting him bodily started taking back him to the Post. While returning he stepped on a buried mine which exploded causing serious injury to his right foot. Taking advantage of this mishap, the Pakistani infiltrator freed himself and tried to run away. Jemadar Gurnam Singh despite his injuries lifted his rifle, opened fire and shot dead the fleeing Pakistani intruder. When other members of the Police post approached the Jemadar to help him, he waved them away telling they to apprehend the other Pakistani infiltrators.

Jemadar Gurnam Singh displayed great courage, examplary leadership and gallantry in this encounter.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the President's Police and Fire Services Medal and consequently carry with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 3rd August, 1967.

V. J. MOORE, Dy. Secy. to the President

LOK SABHA SECRETARIAT

New Delhi-1, the 10th May 1968

No. 3/1/68/*PAC.*—The following Members of Lok Sabha and Rajya Sabha have been elected to serve as Members of the Committee on Public Accounts for the term ending on 30th April, 1969 :—

Members of Lok Sabha

1. Shri Syed Ahmed Aga.
2. Shri K. Anirudhan.
3. Shri S. M. Banerjee.
4. Shri C. K. Bhattacharyya.
5. Shri K. G. Deshmukh.
6. Shri V. Krishnamoorthi.
7. Shri D. K. Kunte.
8. Shri N. R. Laskar.
9. Shri M. R. Masani.
10. Shri K. K. Nayar.
11. Shrimati Sushila Rohatgi.
12. Shri Narendra Kumar Salve.
13. Shri Ram Awtar Sharma.
14. Shrimati Tarkeshwari Sinha.
15. Shri Tayappa Hari Sonavane.

Members of Rajya Sabha

16. Shri A. P. Chatterjee.
17. Shri K. Damodaran.
18. Prof. Shanti Lal Kothari.
19. Shri M. M. Dharia.
20. Shri S. S. Mariswamy.

21. Shri N. R. Muniswamy.
22. Shri Tarkeshwar Pandey.

2. The Speaker has been pleased to appoint Shri M. R. Masani as the Chairman of the Committee.

AVTAR SINGH RIKHY, Dy. Secy.

New Delhi-1, the 10th May 1968

No. 4(2)-PU/68.—The following Members of the Lok Sabha and Rajya Sabha have been declared as duly elected to serve as members of the Committee on Public Undertakings for the term ending on the 30th April, 1969 :—

Members of Lok Sabha

1. Shri C. C. Desai.
2. Shri G. S. Dhillon.
3. Shri Surendranath Dwivedy.
4. Shri Bhogendra Jha.
5. Shri S. S. Kothari.
6. Shrimati T. Lakshmikanthamma.
7. Shri Krishnan Manoharan.
8. Shri S. N. Shukla.
9. Shri Prem Chand Verma.
10. Shri Chandrajeet Yadava.

Members of Rajya Sabha

1. Shri N. K. Bhatt.
2. Miss M. L. Mary Naidu.
3. Shri Gaure Murahari.
4. Shri Rajendra Pratap Sinha.
5. Shri D. Thengari.

The Speaker has been pleased to appoint Shri G. S. Dhillon as Chairman of the Committee.

A. L. RAI, Dy. Secy.

PLANNING COMMISSION

New Delhi, the 25th May 1968

RESOLUTION

ADVISORY PANEL ON EDUCATION

No. PC/1(32)/67-EDN.—Planning Commission has set up an Advisory Panel on Education to :—

(a) review the progress of educational Plans;

(b) make a broad estimate of requirements of development over a period of 15-20 years in relation to socoial needs and the requirements of the economy; and

(c) advise the Central and State Governments in regard to the formulation of long-term educational programmes, with special reference to objectives, targets and strategy for the Fourth Plan to begin from April, 1969.

2. The Constitution of the Panel will be as under :—

Chairman

1. Dr. B. D. Nagchaudhuri,
Member,
Planning Commission.

Members

2. Shri Shantimoy Aich,
Colliery Mazdoor Congress,
Bengal Hotel,
P.O. Asansol,
District Burdwan (West Bengal).

3. Shri T. S. Avinashilingam,
Director,
Sri Ramakrishna Mission Vidyalaya,
P.O. Coimbatore District,
Madras State.

4. Shri A. E. T. Barrow, M.P.,
13-A, Ferozeshah Road,
New Delhi.

5. Dr. R. K. Bhan,
President,
All India Association of University & College Teachers,
Hastinapur College,
Moti Bagh,
New Delhi-3.

6. Shri V. M. Bhide,
Joint Secretary,
Planning Commission,
New Delhi.

7. Shri Anil Bordia,
Additional Director of Education,
Bikaner, Rajasthan.

8. Shri K. C. Chacko,
Director of Technical Education,
Government of Kerala,
Trivandrum.

9. Shri G. K. Chandiramani,
Secretary,
Ministry of Education,
New Delhi.

10. Shri L. S. Chandrakant,
Joint Educational Adviser,
Ministry of Education,
New Delhi.

11. Mrs. F. Chaudhari,
Director of Public Instruction,
Government of Madhya Pradesh,
Bhopal.

12. Shri Shahaji Chatrapati,
Maharaja of Kolhapur,
New Palace,
Kolhapur (Maharashtra).

13. Dr. B. Datta,
Secretary,
Education Department,
Government of West Bengal,
Writers' Building,
Calcutta.

14. Dr. C. D. Deshpande,
Additional Director of Public Instruction,
Government of Maharashtra,
Poona.

15. Prof. R. N. Dogra,
Director,
Indian Institute of Technology,
Mehrauli Road, New Delhi.

16. Shri E. W. Franklin,
Executive Secretary,
All India Federation of Educational Associations,
16A/10, Western Extension Area,
Karol Bagh, New Delhi-5.

17. Dr. P. B. Gajendragadkar,
Vice-Chancellor,
Bombay University,
Bombay.

18. Dr. O. P. Gautam,
Deputy Director General (Education),
Indian Council of Agricultural Research,
New Delhi.

19. Dr. Jehangir J. Ghandy,
Tata Iron & Steel Company,
Jamshedpur, Bihar.

20. Dr. P. S. Gill,
Director,
Central Scientific Instrumentation Organisation,
Chandigarh.

21. Shri A. H. Hemrajani,
Director,
Education Division,
Planning Commission,
New Delhi.

22. Shri G. Jagatpathi,
Joint Secretary,
(Manpower Directorate),
Ministry of Home Affairs,
South Block, New Delhi.

23. Dr. V. S. Jha,
'Shanti Kuteer',
868, Wright Town,
Jabalpur (Madhya Pradesh).

24. Dr. A. C. Joshi,
Vice-Chancellor,
Banaras Hindu University,
Varanasi (Uttar Pradesh).

25. Shri P. N. Kirpal,
Former Secretary,
Ministry of Education,
New Delhi.

26. Prof. D. S. Kothari,
Chairman,
University Grants Commission,
Bahadur Shah Zafar Marg,
New Delhi.

27. Dr. H. N. Kunzru,
President,
Servants of India Society,
Sapru House,
Barakhamba Road, New Delhi.

28. Dr. Harbans Lal,
Economic Adviser,
Planning Commission,
New Delhi.

29. Shri S. Lal,
President,
All India Secondary Teachers' Federation,
F-4, Green Park,
New Delhi-16.

30. Shri S. K. Mallick,
Director General of Employment & Training,
New Delhi.

31. Shri L. Mariapragasam,
General Secretary,
The South Indian Teachers' Union,
Robertsonpet,
Raja Annamalaipuram,
Madras-28.

32. Prof. M .V. Mathur,
Vice-Chancellor,
Rajasthan University,
Jaipur.

33. Dr. S. N. Mehrotra,
Deputy Secretary,
Education Department,
Government of Uttar Pradesh,
Lucknow.

34. Dr. Mohan Sinha Mehta,
Vidya Bhavan Society,
Seva Mandir,
Udaipur, Rajasthan.

35. Dr. S. Misra,
Vice-Chancellor,
Utkal University,
Bhubaneswar.

36. Dr. S. K. Mitra,
Joint Director,
National Council of Educational Research & Training,
Indraprastha Estate,
New Delhi.

37. Dr. A. Lakshmanaswamy Mudaliar,
Vice-Chancellor,
Madras University,
Madras.

38. Prof. H. N. Mukerjee, M.P.,
21, Rakabganj Road,
New Delhi-1.

39. Shri T. Muthian,
Director of Technical Education,
Government of Madras,
Madras.

40. **Shri J. P. Naik,**
Adviser,
Ministry of Education,
New Delhi.

41. Dr. K. C. Naik,
Vice-Chancellor,
University of Agricultural Sciences,
Bangalore.

42. Miss S. Panandikar,
Chairman,
National Council for Women's Education,
8, Garden House, First Road,
Khar, Bombay-5.

43. Dr. M. D. Paul,
Director of School Education,
Government of Madras,
Madras.

44. Shri Hira Lal Patwari,
President,
All India Primary Teachers' Association,
Post Office Tangla,
Assam.

45. Shri S. C. Rajkhowa,
Director of Public Instruction,
Government of Assam,
Shillong.

46. Shri G. Ramachandran,
Secretary,
Gandhi Smarak Nidhi,
Rajghat, New Delhi.

47. Shri S. R. Ramamurthi,
Secretary,
Education Department,
Government of Andhra Pradesh,
Hyderabad.

48. Dr. D. S. Reddi,
Vice-Chancellor,
Osmania University,
Hyderabad.

49. Shri P. S. Redkar,
7, Bhimrao Wadi,
Thakurdwar,
Bombay-2.

50. Dr. K. G. Saiyidain,
Director,
Asian Institute of Educational Planning and Administration,
Indraprastha Estate,
New Delhi.

51. Dr. Vikram A. Sarabhai,
Chairman,
Atomic Energy Commission,
Appollo Pier Road,
Ballard Estate,
Bombay.

52. Shri M. T. Shukla,
Textile Labour Association,
Gandhi Majoor Sevalaya,
Bhadra,
Ahmedabad.

53. Dr. P. D. Shukla,
Joint Educational Adviser,
Ministry of Education,
New Delhi.

54. Shri Dwarka Singh,
Academic Registrar,
Bihar Text Book Publishing Corporation Ltd.,
Patna-1, Bihar.

55. Proof. M. L. Sondhi, M.P.,
14, Meena Bagh,
New Delhi-1.

56. Prof. M. N. Srinivas,
Head of the Department of Sociology,
University of Delhi,
Delhi.

57. Dr. A. R. Verma,
Director,
National Physical Laboratory,
New Delhi.

Secretary

58. Shri D. P. Nayar,
Senior Specialist (Education),
Planning Commission,
New Delhi.

Associate Secretary

59. Dr. S. N. Saraf,
Director (Education),
Planning Commission,
New Delhi.

3. For facilitating the study of any special problem, the Panel may constitute sub-committees and co-opt Members.

4. The Panel may meet as often as may be necessary at New Delhi or any other place.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be published in the Gazette of India and communicated to all concerned.

B. D. PANDE, Secy.
Planning Commission

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi-1, the 24th May 1968

CORRIGENDUM

No. 20/1/68-AIS(I).—In the Ministry of Home Affairs Notification No. 20/1/68-AIS(I), dated the 24th February 1968 published in Part I—Section 1 of the Gazette of India of 24th February 1968, the following changes may be effected :

Preference	For	Read
RULES		
Page 184, col. 1, cage below rule 9, lines 1 and 3.	(i) Service for (ii) the cols. (1), (2), (3).	(i) Services for (ii) the cols. (i (ii), (iii).
Page 185, col. 1, cage below rule 19, line 3.	The cols. (1), (2), (3).	The cols. (i), (ii), (iii)
APPENDIX II		
SCHEDULE		
Part A		
Page 187, col. 2, para 2, line 5.	preceive	perceive
Part B		
Page 188, col. 2, 6th sub para of subject 6. Botany, line 4.	pluses	pulses
Page 189, col. 1, line 3 of Note II under subject 11—Hindi.	they	them
Page 189, col. 1, subject 13—Indian History, line 2.	Maruya	Maurya
Page 189, col. 1, subject 14—British History, line 2.	wil	will
Page 190, col. 2, subheading 'Design of Steel and Masonry Reservoirs', line 2, under subject 24—Applied Mechanics.	consideration	considerations
Page 190, col 2, subheading 'General', 2nd para, line 4, under subject 24—Applied Mechanics.	srteses	streases
Part C		
age 192, col 2, heading of subject 9(b) Pndian History II, line i1.	Great Guhals	Great Mughals
Preference	For	Read
Page 194, col. 2, last sub-para of subject 12(b) Advanced Psychology including Experimental Psychology, line 1.	psycology	psychology
APPENDIX III		
Page 200, line 6 of Note 2, under para (f) of item 11.	consequence	consequences

A. N. BATABYAL, Under Secy.

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Economic Affairs)

New Delhi, the 22nd May 1968

NATIONAL SAVINGS BRANCH

No. F. 3(6)-NS/68.—The President hereby makes the following rules to amend the Post Office (Fixed Deposits) Rules, 1968, published with the notification of the Government of India, in the Ministry of Finance (Department of Economic Affairs) No. F. 3(6)-NS/68 dated 29th February, 1968.

(1) These rules may be called the Post Office (Fixed Deposits) Amendment Rules, 1968.

(2) They shall come into force on the 1st May, 1968.

2. In the Post Office (Fixed Deposits) Rules, 1968, in rule 4 after sub-rule (2) the following sub-rule shall be *added* namely :—

"(3) Notwithstanding anything contained in these rules or in the Government Savings Certificates (Fixed Deposits) Rules, 1968, for the purpose of computing the maximum limit of fixed deposit allowable in favour of a person specified in column (3) of the Table under sub-rule (1) hereto, any amount deposited by him in an account opened under the Government Savings Certificates (Fixed Deposits) Rules, 1968, shall be deemed to be an amount deposited under these rules."

R. P. SAKSENA, Under Secy.

New Delhi, the 27th May 1968

No. F. 2(1)NS/68.—The President hereby makes the following rules further to amend the Post Office Savings Bank (Cumulative Time Deposits) Rules, 1959, published with the notification of the Government of India, in the Ministry of Finance (Department of Economic Affairs), No. F. 3(40) NS/58 dated 19th December, 1958 namely :—

1. These rules may be called the Post Office Savings Bank (Cumulative Deposits) Second Amendment Rules, 1968.

2. In the Post Office Savings Bank (Cumulative Time Deposits) Rules, 1959, after rule 8A, the following rule shall be *inserted*, namely :—

"8B. Interest payable on deposits retained after maturity—If in respect of any account that matures for repayment on or after the 1st June, 1968, the repayment of deposits in that account is not claimed on maturity, the depositor shall be paid simple interest, on the maturity value (inclusive of bonus) of his account for a maximum period of two years from the date of maturity, at such rates as may be prescribed from time to time in respect of single accounts under rule 9 of the Post Office Savings Bank Rules, 1965. In computing the period for which interest is payable, any part of the period which is less than a month—shall be ignored. Interest as calculated above shall be paid to the depositor in a lump-sum at the time of the repayment of the deposits."

A. G. KRISHNAN, Dy. Secy.

MINISTRY OF PETROLEUM & CHEMICALS

(Department of Petroleum)

RESOLUTION

New Delhi, the 22nd May 1968

No. 22(13)68-*OR*.—In partial modification of Ministry of Petroleum and Chemicals (Department of Petroleum) Resolution No. 22(13)/68-OR dated the 20th April, 1968, para 2(iii) of the same is amended to read as under :—

"To recommend the steps that must be taken to prevent the recurrence of such happenings in refineries in future."

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India; Part I, Section 1.

ORDERED, further, that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries/Departments of Government of India, Government of Bihar and all others concerned.

M. V. RAJWADE, Jt. Secy.

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND COMPANY AFFAIRS

(Department of Industrial Development)

RESOLUTION

New Delhi, the 18th May 1968

No. Pr.C.28(2)/65.—The Committee for Presidential Awards for Public Sector Industries set up in the Government of India Resolution No. Pr.C.28(1)/62, dated the 17th November, 1962, has considered the performance during 1964-65 of the Undertakings notified in the Government of India Resolution No. Pr.C.28(2)/65, dated the 7th January, 1966 (published in the Gazette of India on the 22nd January, 1966) and decided that a Shield in Silver and Copper be awarded to the Indian Telephone Industries Limited, Bangalore. The Committee has also decided that no Certificates of Merit (Copper Plate) or Honour (Parchment Paper) need be awarded to any Undertakings during the year 1964-65.

ORDER

IT IS ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all the members of the Committee and to the Undertakings concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. J. KAMATH, Jt. Secy.

New Delhi, the 29th May 1968

PUBLIC NOTICE

SUB :—*Applications for allotment of additional capacity for manufacture of Calcined Petroleum Coke*

No. 46(1)/68-*LI(I)*.—The Government of India have in the past been rejecting applications for manufacture of Calcined Petroleum Coke as the country was more or less self-sufficient in this item. The position about the indigenous availability of Calcined Petroleum Coke has been reviewed keeping in view, among other things, the requirements of the aluminium industry. It is proposed to set up an additional capacity of about 50,000 tonnes per annum in the private sector.

Interested entrepreneurs, including existing producers of calcined petroleum coke, may now submit their application with complete particulars to the Union Ministry of Industrial Development and Company Affairs (Department of Industrial Development), Udyog Bhavan, New Delhi. The applications should include information about the annual capacity, foreign exchange required on capital and maintenance account phased manufacturing programme, terms of foreign collaboration etc.

The last date for submission of applications is 31st July 1968.

No. 17(1)/67-*LI(I)*.—In this Ministry's Notification No. 17(1)/67-LI(I), dated 24th January, 1968, the following amendments will be made :—

Under the heading "Members".

Please *delete* the entries against Sl. No. 2 *substitute* the following :—

"Shri M. Krishnamoorthy, M/s. Shri Krishna Graphite Crucible Works, Rajahmundry".

A. P. SARWAN, Dy. Secy.

MINISTRY OF STEEL, MINES AND METALS

(Department of Mines and Metals)

RESOLUTION

New Delhi, the 30th May 1968

Advisory Council on Non-Ferrous Metals

No. 4(54)*Met*/67.—The Government of India have decided to set up an Advisory Council on Non-Ferrous Metals to advise them on effective steps to be taken towards the full exploitation and rapid development of non-ferrous metal resources of the country. The functions and composition of the Council will be as follows :—

(A) *Functions*

(i) Recommending targets for production, co-ordinating production programmes and reviewing progress from time to time.

(ii) Suggesting norms of efficiency with a view to eliminating waste, obtaining maximum production, improving quality and reducing costs.

(iii) Recommending measures for securing the fuller utilisation of the installed capacity and for improving the working of the industry, particularly of the less efficient units.

(iv) Promoting arrangements for better marketing and helping in the devising of a system of distribution and sale of the produce of the industry which would be satisfactory to the consumer.

(v) Promoting standardisation of products.

(vi) Promoting the training of persons engaged or proposing engagement in the industry and their education in technical or artistic subjects relevant thereto.

(vii) Promoting or undertaking scientific and industrial research, research into matters affecting industrial psychology and research into matters relating to production and to the consumption or use of goods and services supplied by the industry.

(viii) Assisting in the distribution of controlled materials and promoting arrangements for obtaining materials for the industry.

(ix) Promoting or undertaking inquiry as to materials and equipment and as to methods of production, management and labour utilisation, including the discovery and development of new materials, equipment and methods and of improvements in those already in use, the assessment of the advantages of different alternatives and the conduct of experimental establishments and of tests on a commercial scale.

(x) Promoting the retraining in alternative occupations of personnel engaged in or retrenched from the industry.

(xi) Promoting improvements and standardisation of accounting and cost methods and practice.

(xii) Investigating possibilities of decentralising stages and process of production with a view to encouraging the growth of allied small scale industries.

(xiii) Promoting or undertaking the collection and formulation of statistics.

(xiv) Promoting the adoption of measures for increasing the productivity of labour, including measures for securing safer and better working conditions and the provision and improvement of amenities and incentives for workers.

(xv) Advising on any matters relating to the Non-Ferrous Metals Industry (other than remuneration and conditions of employment) as to which the Central Government may request the Council to advise and undertaking inquiries for the purpose of enabling the Council so to advise; and

(xvi) Undertaking arrangements for making available to the industry information obtained and for advising on matters with which the Council is concerned in the exercise of any of its functions.

(B) *Composition*

Chairman

1. Minister of Steel, Mines and Metals.

Members

2. Minister of State in the Ministry of Steel, Mines and Metals.
3. Dy. Minister in the Ministry of Steel, Mines and Metals.
4. Secretary, Department of Mines and Metals.
5. Shri T. N. Lakshminarayanan, Joint Secretary, Department of Mines and Metals.
6. Shri Raghunath Singh,
   Chairman, Hindustan Zinc Ltd., Udaipur.
7. Shri Rama Row Macherla,
   Chairman, Bharat Aluminium Company.
8. Shri T. C. Seth,
   Managing Director,
   Hindustan Copper Ltd. Khetri.
9. Shri J. D. Adhia,
   Managing Director,
   Hindustan Zinc Ltd., Udaipur.
10. Shri P. M. Menon,
    Technical Adviser,
    Bharat Aluminium Company.
11. Shri A. L. Sabharwal,
    General Manager,
    Indian Aluminium Co., Calcutta.
12. Shri G. Guruswamy,
    Dy. Works Supdt.,
    Madras Aluminium Co., Coimbatore.
13. Shri N. A. B. Hill,
    General Manager and Director,
    Indian Copper Corporation,
    Ghatsila.
14. Shri D. D. Wood,
    Eyre Smelting Co. Ltd.,
    Calcutta.
15. Shri P. R. Kamani,
    Managing Director,
    Kamani Metals and Alloys Ltd.,
    Bombay.
16. Shri C. J. Shah,
    Technical Consultant,
    Multimetal Ltd.,
    Kota (Rajasthan).
17. Dr. D. P. Antia,
    Dy. Managing Director,
    Union Carbide (India) Ltd.
    Calcutta.
18. Shri S. S. Jain,
    Managing Director,
    Saru Smelting and Refining Co.
    Meerut.
19. Shri S. Viswanathan,
    Director (Research),
    Tata Iron and Steel Company,
    Jamshedpur.
20. Shri A. R. Bhatt,
    President,
    Federation of Association of Small Industries of India,
    New Delhi.
21. Shri B. L. Rajgharaia,
    Chairman,
    Engineering Export Promotion Council,
    Calcutta.
22. Dr. A. S. Sharma,
    General Manager,
    Minerals & Metals Trading Corporation,
    New Delhi.
23. Dr. T. Banerji,
    Scientist-in-charge,
    National Metallurgical Laboratory,
    Jamshedpur.
24. Shri B. S. Krishnamachar,
    Assistant Director-General,
    Indian Standards Institution,
    New Delhi.
25. Shri Brahm Prakash,
    Director,
    Metallurgical Division, Atomic Energy Department,
    Bombay.
26. Shri R. K. Sethi,
    Chief Consultant,
    National Industrial Development Corporation,
    New Delhi.
27. Dr. L. R. Vaidyanath,
    Manager,
    Indian Copper Information Centre,
    Calcutta.
28. Dr. M. N. Parthasarathy,
    Indian Lead-Zinc Information Centre,
    Calcutta.
29. Shri G. D. Binani,
    President,
    Indian Non-Ferrous Metals Manufacturers Association,
    Calcutta.
30. A representative of the Federation of Indian Chambers of Commerce & Industry, New Delhi.
31. A representative of Planning Commission.
32. A representative of the Ministry of Irrigation and Power.
33. A representative of Ministry of Industrial Development & Company Affairs.
34. A representative of Ministry of Communication (P. & T. Board).
35. A representative of Ministry of Defence.
36. A representative of Railway Board.
37. A representative of Ministry of Finance.

38. Shri K. L. Nanjappa,
Development Commissioner,
Small Scale Industries,
New Delhi.

39. Shri N. Krishnaswamy,
Industrial Adviser, D.G.T.D.,
New Delhi.

40. Dr. P. Dayal,
Development Officer, D.G.T.D.,
New Delhi.

41. Director-General, Geological Survey of India,
Calcutta.

42. Controller, Indian Bureau of Mines,
Nagpur.

43. Shri A. Krishnan, Deputy Secretary, *Member Secretary*
Department of Mines & Metals.

The term of the above Members of the Council will be for a period of 2 years.

ORDER

ORDERED that this Resolution be communicated to all the State Governments, the several Ministries of Government of India, Prime Minister's Secretariat, Cabinet Secretariat, Parliament Secretariat, the Private and Military Secretaries to the President, the Planning Commission, the Comptroller and Auditor General of India, the Accountant General, Commerce, Works & Miscellaneous.

ORDERED also that this Resolution be published in the Gazette of India for general Information.

M. S. BHATNAGAR, Under Secy.

MINISTRY OF HEALTH, FAMILY PLANNING & URBAN DEVELOPMENT

Department of Family Planning

RESOLUTIONS

New Delhi, the 18th May 1968

No. 17-9/66-C&C(FP).—In partial modification of this Ministry's Resolution No. 17-9/66-C&C(FP), dated the 30th July, 1966, constituting a Committee to consider all technical problems connected with Family Planning Programme in the field with particular reference to IUCD and sterilisaton procedures, the Government of India have decided that Dr. R. D. Ayyar, Director General, Health Services, and Dr. P. R. Trivedi, President Indian Medical Association, will be the members of the said Committee in place of Dr. K. N. Rao and Dr. Bhola Nath respectively.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

ORDERED also that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments.

The 22nd May 1968

No. F.16-1/66-C&C(FP).—The Govt. of India is pleased to dissolve the Evaluation Committee constituted *vide* Ministry of Health & Family Planning, (Department of Family Planning) Notification No. F.16-1/66-C&C(FP), dated the 5th January, 1967 to review the progress of work of various Family Planning Communication & Action Research Projects.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all State Govts/Union Territories/Ministries of the Govt. of India and Planning Commission.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. N. SRIVASTAVA, Jt. Secy.

MINISTRY OF FOOD, AGRICULTURE, COMMUNITY DEVELOPMENT AND COOPERATION

(Department of Agriculture)

RESOLUTION

New Delhi-1, the 22nd May 1968

No. 6-26/67-C.C.II.—It has been decided to reconstitute the Indian Cotton Development Council set up *vide* Government of India's Resolution No. 6-3/65-Reorgn.(CC)(Admn.) dated the 19th May, 1966. The reconstituted Council will consist of the following :—

I. *Chairman*

A growers' representative to be nominated by the Government of India.

II. *Vice-Chairman*

The Secretary to the Government of India in the Department of Agriculture.

III. *Members*

(a) *Representatives of the Central and State Governments*

(1) One representative each of the State Government in the Department of Agriculture to be nominated by the Government of :—
(i) Maharashtra
(ii) Gujarat
(iii) Punjab
(iv) Haryana
(v) Mysore
(vi) Madras
(vii) Madhya Pradesh
(viii) Andhra Pradesh
(ix) Rajasthan

(2) One representative of the Planning Commission

(3) Agricultural Commissioner with the Government of India

(4) Textile Commissioner, Ministry of Commerce.

(5) Director General, Indian Council of Agricultural Research or his representative.

(b) *Growers' representatives*

(1) One representatives of the growers each to be nominated by the Government of :—
(i) Maharashtra
(ii) Gujarat
(iii) Punjab
(iv) Haryana
(v) Mysore
(vi) Madras
(vii) Madhya Pradesh
(viii) Andhra Pradesh
(ix) Rajasthan

(2) One representative of growers to be nominated by the Government of India.

(c) *Representatives of Industry*

Three representatives of the Indian Cotton Mills Federation.

(d) *Representatives of Trade*

Three representatives of the East India Cotton Association.

(e) *Members of Parliament*

Two members of Parliament nominated by the Government of India in consultation with the Department of Parliamentary Affairs :—
(i) Shri P. S. Patil
(ii) Shri A. S. Sehgal

(f) Such additional persons as may, from time to time, be nominated by the Government of India to represent interest(s) not already represented in the Council.

IV. *Member Secretary*

The Director, Regional Office, Cotton Development, Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation (Department of Agriculture).

V. *Observers*

(who would not be members of the Council but would be invariably invited to assist the Council in its deliberations).

(i) Agricultural Marketing Adviser, Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation.

(ii) Joint Secretary (Finance) accredited to the Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation.

(iii) Economic & Statistical Adviser, Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation (Department of Agriculture).

(iv) Plant Protection Adviser to the Government of India.

(v) A representative of National Seeds Corporation.

(vi) Director, Technological Research Laboratory (Cotton) Matunga, Bombay.

(vii) Deputy Commissioner (Export Promotion) in the Department of Agriculture.

2. The Council will be an advisory body and will have the following functions :—

(i) to consider, from time to time, the Cotton Development Programme formulated by the Central and State Governments;

(ii) to consider and review the progress of cotton development in the context of targets laid down.

(iii) to recommend measures for accelerating the tempo of development programmes/schemes, wherever necessary

(iv) to consider and to review the problems of cotton marketing and trade, including price policy, and to make suggestions for improvement; and

(v) any other function, which may from time to time, be assigned by the Government of India to the Council.

3. The Council will meet periodically in important Centres of Trade and Industry, in areas in which cotton is grown and will make its recommendations to the Government of India.

4. The term of the members of the Council will be for three years. It may, however, be extended by the Government of India, wherever considered necessary.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments, Administrations of Union Territories and Ministries of the Government of India, Planning Commission, Cabinet Secretariat, Prime Minister's Secretariat, Lok Sabha Secretariat and Rajya Sabha Secretariat.

2. ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India for General information.

S. J. MAZUMDAR, Additional Secy.

MINISTRY OF EDUCATION

New Delhi, the 29th May 1968

No. F. 1-8/67 *YS*-2.—In continuation of the Ministry of Education Notification of even number dated the 18th October, 1967, Prof. S. K. Bose, Director, Indian Institute of Technology, Powai, Bombay-76, on his appointment as the Chairman, Inter University Board of India and Ceylon, is nominated as a member of the All India Council of Sports with effect from the 16th May, 1968 and up to the 17th October, 1968, *Vice* Dr. D. S. Reddy.

R. L. ANAND, Under Secy.

RESOLUTION

New Delhi, the 28th May 1968

No. F. 1-2/67-*H.I.*—In partial modification of the Ministry of Education Resolution No. F. 1-12/65-H.I dated the 4th November, 1965, it is hereby resolved to make the following amendments in the aforesaid Resolution.

The amendment shall take immediate effect.

(1) *The existing paragraph* 4 *may be substituted by the following* :—

"4. *Karyakarini Upasamiti.*

In order to enable the Samiti to discharge its various functions effectively, it may appoint a Karyakarini Upasamiti. The Upasamiti shall ordinarily consist of not more than 15 members to be nominated by the Chairman. The Vice-Chairman of the Samiti shall function as the Chairman of the Upasamiti. The Upasamiti shall have the power to coopt persons either from amongst the members of the Samiti or from outside who possess specialist knowledge and experience of the problems of propagation and development of Hindi".

(2) *The following shall be added as new paragraph* 5 *in the aforesaid Resolution* :—

"5. *Quorum.*

The quorum for the meetings of the Samiti/Upasamiti shall be one-third of the total membership of the Samiti Upasamiti."

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all States Governments and Union Administrations, Prime Minister's Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Planning Commission, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, President's Secretariat and all Ministries and Departments of the Government of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. S. BHATNAGAR, Under Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

RESOLUTION

New Delhi, the 9th May 1968

No. EL.II-35(10)/63.—With a view to give representation to the Central Electricity Authority and the Assam State Electricity Board on the North Eastern Regional Electricity Board set up *vide* this Ministry's Resolution No. EL-II-35 (10)/63, dated the 12th March, 1964, it has been decided that in para 2 of the Resolution, as amended *vide* Resolution No. EL-II-35(10)/63, dated the 5th March, 1964, the following shall be inserted as entries (vi) and (vii)—

(vi) A representative of the Central Electricity Auhority.

(vii) The Chairman, Assam State Electricity Board.

ORDER

ORDERED that the Resolution be communicated to the Governments of Assam, Nagaland, Tripura and NEFA, Manipur, Chairman, Assam State Electricity Board, Shillong, the Ministries of Government of India, Prime Minister's Secretariat, Secretary to the President, the Planning Commission and the Comptroller and Auditor General of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. P. MATHRANI, Secy.

MINISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING

New Delhi, the 25th May 1968

No. 24/3/68-*FP.*—In pursuance of the Resolution of the Government of India in the Ministry of Information and Broadcasting No. 1/29/58-FP dated the 5th February, 1959, as amended from time to time the Central Government has renominated Shri Raman K. Desai and Smt. M. Nasrullah, as members of the Film Advisory Board, Bombay with effect from the 1st June, 1968, for a further term of 2 years.

2. The term of Smt. T. V. Dehejia, as member of the Film Advisory Board will expire on the 31st May, 1968.

BANU RAM AGGARWAL, Under Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1968